सम्पादकीय
सत्प्रवृत्तियों के प्रति आस्था बढ़ाने वाली हो दीवाली 2

पूज्य गुरुदेव की विचार संजीवनी जाग्रत् आत्माओं में नवप्राणों का संचार करेगी।
- **श्रद्धेया शैल जीजी** 3

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी द्वारा हाटपिपल्या में प्रज्ञेश्वर महादेव की प्राण प्रतिष्ठा 6

गायत्री शक्तिपीठ निर्माण
हिण्डौन सिटी, राजस्थान में बन रहा है श्रद्धा-समर्पण का दिव्य स्मारक 7

श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी की नवरात्र व्याख्यान माला
भावपूर्ण भक्ति से ही होती है भगवत्कृपा की प्राप्ति 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 अक्टूबर 2022

वर्ष : 35, अंक : 08
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 अक्टूबर 2022
वार्षिक चंदा : ₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-

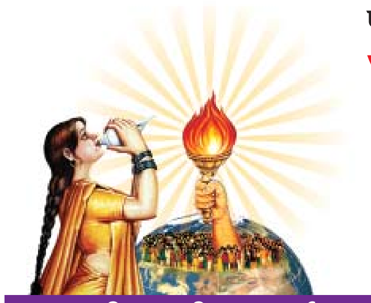

नारी सशक्तीकरण वर्ष

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

यह महाकाल के साथ साझेदारी के सौभाग्य के वरण की वेला है

ईश्वरनिष्ठ जाग्रत् देवात्माओं के सहारे रावण-राज्य का अंत होकर ही रहेगा।

-वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

पुस्तक 'महाकाल और उसकी प्रत्यावर्तन प्रक्रिया' से संकलित-सम्पादित

रावण राज्य की विशेषताएँ

एक नगरी थी लंका। जिसका राजा था अहंकार, प्रपंच, स्वार्थ और वासना का प्रतिनिधि-रावण। रावण की नीति थी-अपने असीम स्वार्थों की असीम पूर्ति और उसके लिये हर किसी का उत्पीड़न। अपने सारे शरीर-बल, बुद्धि-बल और परिवारबल का उपयोग वह दूसरों को आतंकित करने और मनमानी बरतने में करता था। इस प्रकार की अनीति का मार्ग अवलम्बन करने वाले आरम्भ में फूलते-फलते भी देखे गये हैं। रावण भी खूब फूला-फला था। उसका कुटुम्ब, परिवार बढ़ा। कहते हैं कि एक लाख पूत और सवा लाख नाती उसके थे। यह तो उसका निजी परिवार था। एक से एक बड़े मायावी साथी उसके थे। त्रिजटा जो अनेक रूप बना सकती थी, मारीच जो अनेक वेष बदल सकता था, कुम्भकरण, मेघनाद, खरदूषण, सुबाहु आदि अगणित पराक्रमी उसके साथ थे।

आतंकवादी के साथी कितने ही हो भी जाते हैं। इस सहयोग, साझेदारी में ही दुष्ट-दुरात्माओं को लाभ दिखाई पड़ता है। सो देखते-देखते लंका सोने की बन गयी। लंका में वरुण पानी भरते थे, पवन बुहारी लगाते थे, अग्निदेव भोजन पकाते थे। निदान सभी देवता बन्धन में बँधे विवश उसकी नगरी की सेवा-सुश्रुषा में जुटे रहने लगे। लोग इस आतंक से दुःखी तो बहुत थे पर उपाय सूझ न पड़ता था। निराशा छाई हुई थी। दुर्दैव को कोसने के अतिरिक्त किसी से कुछ बन न पड़ रहा था।

यही रावण-राज्य का स्वरूप है। वह ऐतिहासिक भी हो सकता है और तथ्यात्मक भी। त्रेता युग के रूप में वह आज भी जीवित है। अविवेकजन्य अनाचार की तूती आज भी बोल रही है। व्यक्ति और समाज सभी उसके आतंक राज्य में नतमस्तक खड़े हैं। प्राचीनकाल में रावण-राज एक शासन तंत्र में केन्द्रीभूत था। आज उसने बौद्धिक विकृति का रूप धारण कर जनमानस को सम्मोहित और आतंकित किया है। लोगों के सोचने और करने की दिशा उसी ओर बह रही है-जिस ओर वह उद्धत अविवेक अपनी सफलताओं का दर्प दिखाता हुआ-बहने और चलने के लिये विवश करता है। आज की भावनात्मक नैतिक और सामाजिक परिस्थितियों के मूल में लगता है कि अमूर्त रावण का ही आतंक राज्य प्रतिष्ठापित हो रहा है। सोने की नगरी लंका हर किसी का लक्ष्य बनी हुई थी। धन के वैभव के अतिरिक्त और किसी की कुछ चाह है ही नहीं। इन परिस्थितियों में मानवता को संत्रस्त होना ही पड़ेगा, दुःख-दारिद्र्य और शोक संताप ही तो रावण राज्य की उपलब्धियाँ हैं।

अन्धकार को दीये की चुनौती

मनुष्य मूर्ख तो है, पर विचारशून्य नहीं। स्वार्थियों और संकीर्ण स्तर वालों का बाहुल्य सदा रहा है, पर लोक-मंगल को जीवन का लक्ष्य बनाने वाले सत्पुरुषों से धरती माता की गोदी सर्वथा सूनी नहीं होती। ऐसी अन्धेरी परिस्थितियों में ज्योति किरण की तरह कुछ आत्मायें जन्मती हैं और उस विपन्नता से जूझ पड़ती हैं। साधन स्वल्प होते हुए भी वे सदुद्देश्य का समर्थन करने के कारण दैवी शक्ति का अनुग्रह प्राप्त करती हैं और अन्ततः लोग साधनहीन विवेक को विजयी और साधन सम्पन्न अविवेक को परास्त हुआ देखते हैं। ऐसा ही रावण काल में भी हुआ।

राम-लक्ष्मण वनवास के लिये चल दिये। सीता हरी गयीं और वे लंका पहुँचीं। वहाँ आतंक का उद्‌गम बदलकर ज्ञान और भक्ति के प्रतीक विभीषण को प्रतिष्ठापित किया जाना था। भगवती ने इसी के लिये अभीष्ट परिस्थितियाँ विनिर्मित की। सिया हरण न होता तो शायद लंका का कायाकल्प भी न हो पाता। राम ने संस्कृति-सीता के अपहरण को असह्य माना और वे दुर्दान्त रावण को परास्त करने के लिये कटिबद्ध हो गये।

राम के पास कोई सेना नहीं थी। परदेश में मामूली-सा धनुष बाण लिये दोनों भाई वनवासी की तरह घूम रहे थे। आतंक के विरुद्ध न लड़ने के लिये साधन थे, न सुविधा, न परिस्थिति थी, न व्यवस्था। पर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अकेले अपने मार्ग पर बढ़ चले।

साहस जीता, सम्पन्नता हारी

सचाई और न्याय का लोग समर्थन तो करना चाहते हैं, पर तब, जब किसी पर्वत जैसे ऊँचे, भारी और सुदृढ़ व्यक्तित्व का नेतृत्व मिले। राम इन्हीं विशेषताओं के प्रतीक थे। उन्होंने समर्थ लोगों में अपने महान अभियान का संदेश पहुँचाया और सहयोग की याचना की, पर न तो एक भी भूपाल काम आया और न धनपति। वे तो विजयी के साथ होते हैं, क्योंकि उन्हीं की सहायता से उन्हें लाभ रहता है। अमीरी अपना बचाव पहले देखती है। सत्य और न्याय से उसे सहानुभूति भले ही हो, पर सहायता तो सफल और समर्थ की ही करना लाभदायक होता है।

राम ने गरीबों का द्वार खटखटाया और उन्हें बताया कि थोड़ी-सी सुविधायें भोगते हुए आराम की निर्जीव जिंदगी काटने की अपेक्षा अधर्म से लड़ने और धर्म को प्रतिष्ठापित करने के ईश्वरीय प्रयोजन में सहयोग देते हुए मर जाना श्रेयस्कर है। यह बात रीछ-वानरों की समझ में आ गयी। भले और भोले लोग चतुर और समर्थ लोगों की अपेक्षा ईश्वर के अधिक निकट होते हैं, सो ईश्वरीय सन्देश उन्हीं को प्रभावित करता है। रीछ-वानरों ने घर, शरीर और सुविधाओं का मोह छोड़ा और वे सच्चे सूरमाओं की तरह निहत्थे होते हुए भी युग-दानव के विरुद्ध संघर्ष में कूद पड़े। दीखता यही था कि शायद इतना बड़ा आतंक पराजित न हो सके, शायद हम साधन-विहीन लोग ही इस संघर्ष में खेत रह जायें, पर उनकी आत्मा ने कहा न्याय और औचित्य के लिये लड़ने का प्रयत्न अपने आप में एक बहुत बड़ी विजय है, इस संघर्ष का हर कदम धर्म-सैनिक की सफलता है। भौतिक विजय या पराजय के झंझट में क्यों पड़ा जाय?

बूढा जटायु जानता था कि मेरी शक्ति स्वल्प है। रावण से जूझने का क्या परिणाम हो सकता है, वह भी उसे विदित था, फिर भी उसने सोचा जीवन की इससे बड़ी सार्थकता और सफलता दूसरी नहीं हो सकती कि उसका उपयोग न्याय-धर्म की रक्षा करने और लोकमंगल के अभिवर्धन में हो सके।

इन्हीं दिल वालों में से थी-एक गिलहरी। उसने सोचा मैं बहुत छोटी जरूर हूँ-साधन विहीन भी, पर इससे क्या? जितना ईश्वर ने दिया है उसी को लेकर उसके आगे आत्मसमर्पण क्यों न करूँ? गिलहरी अपने बालों में धूलि के थोड़े से कण भर ले जाती और समुद्र में छिड़क आती। उसका यह अनवरत श्रम देखकर देखने वालों ने हैरत में भरकर उससे पूछा, "आखिर यह सब क्यों कर रही हो, इसका क्या परिणाम होने की आशा है।"

गिलहरी ने कहा, "राम समुद्र पार जाकर रावण से लड़ने खड़े हैं। नल, नील समुद्र पर पुल बनाने में जुटे हैं, हनुमान समुद्र को छलाँग चुके, फिर क्या इस बाधा के सागर को पाटने में मेरा कोई योगदान न होना चाहिये? इस छोटे से प्रयत्न से कितने समय में क्या परिणाम होगा, यह सोचना मेरा काम नहीं। सच्चाई के समर्थक एक ही बात जानते हैं कि जो अपने पास है उसे लेकर आगे बढ़ना और निष्ठापूर्वक सतत संघर्ष में अपनी अन्तिम बूंद समर्पित कर देना।"

जो हो, राम-रावण युद्ध होकर रहा। एक से बढ़कर एक आतंकवादी असुर उस संग्राम में भूमिशायी हो गये। सोने की लंका जल-वल कर खाक हो गयी। रामराज्य की स्थापना हुई और उसका विजयोत्सव-विजया-दशमी बड़े ठाट-बाट से मनाई गयी। सभी क्षत्रपों ने आश्चर्य किया कि भला इतना साधन-सम्पन्न रावण सपरिवार इतनी आसानी से कैसे मारा गया? समाधानकर्ता ने बताया-इसमें तनिक भी अचम्भे की बात नहीं। पाप तो अपनी मौत मरता है। आश्चर्य की बात तो यह कही जा सकती है कि साधनहीन रामदल ने इतनी बड़ी विजय का श्रेय प्राप्त कैसे कर लिया? सो हे समीक्षक! पूरी बात समझो, अन्ततः सत्य ही जीतता है, अन्ततः धर्म ही जीतता है। अन्ततः विवेक ही जीतता है। अनीति का अन्त करने के लिये जब महाकाल की थिरकन गतिशील होती है तो असम्भव दीखने वाली बातें सम्भव होने में देर नहीं लगती।

अंतःकरण की पुकार अनसुनी न रहे

रावण का आतंक आखिर समाप्त हुआ ही, स्वार्थ और अविवेक का वर्तमान आतंक जिसने आज जनमानस को बुरी तरह सम्मोहित कर लिया है और दशों दिशाओं में हा-हाकार भरा नारकीय वातावरण प्रस्तुत कर दिया है, आखिर यह भी तो समाप्त होना ही है। महाकाल का नवनिर्माण प्रत्यावर्तन, प्रचण्ड प्रकाश की तरह अगणित अन्तःकरणों में प्रवेश करके कुछ कर गुजरने की प्रेरणा भर रहा है। इसे आतंक युग की समाप्ति का स्पष्ट प्रमाण नहीं, तो और क्या कहा जाय? इसे नवयुग के रामराज्य के आगमन का शुभ संकेत नहीं, तो और क्या माना जाय?

सत्प्रवृत्तियों के प्रति आस्था बढ़ाने एवं ज्ञानदीप जलाने वाली हो हमारी दीवाली

दीपावली पर्व की पावन परम्पराओं के संग उनके प्रयोजनों को पूरा करने की ओर भी ध्यान दिया जाए

राम और रावण

दीपावली देव संस्कृति में निहित उदात्त आदर्शों एवं जीवन मूल्यों के प्रति आस्था की अभिव्यक्ति का पर्व है। 'राम' और 'रावण' मात्र व्यक्ति नहीं, विशिष्ट गुणों वाले व्यक्तित्वों का प्रतीक हैं। यह मानव-मन की प्रवृत्तियाँ हैं। 'राम' न्याय, नीति, मर्यादा, अनुशासन, प्रेम, विनम्रता, सदाचार, सेवा, साधना जैसे सद्गुणों से युक्त व्यक्तित्व है, जो अन्याय, अनीति, अनाचार के प्रतिकार के लिए हर क्षण तत्पर है। दूसरी ओर 'रावण' जीवन को पतन की ओर ले जाने वाले काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, वासना, तृष्णा, अहंकार जैसे अवगुणों का समुच्चय है।

मानवीय मन की प्रवृत्तियों का सीधा सम्बन्ध आस्थाओं से है। पुस्तकीय ज्ञान, धन-साधन, पद-प्रतिष्ठा, तप-साधना से इनका विशेष लेना-देना नहीं। नन्हीं-सी गिलहरी और गरीब भीलनी शबरी के मन में भी राम बसते हैं और भक्त विभीषण के मन में भी। लेकिन आस्था के अभाव में असुरता के प्रतिकार के लिए समर्थ और सशक्त क्षत्रपों से किया गया राम का अनुरोध अनसुना ही रह जाता है। दूसरी ओर धन-साधन और मायावी विद्याओं के धनी शूर्पणखा, मारीच, सुबाहु, प्रचण्ड तपस्वी मेघनाथ, कुम्भकर्ण आदि 'रावण' के संगी-साथी हैं।

आज की दुनिया दिखाई तो देती साधन-सम्पन्न एवं बुद्धिमान लोगों की है, लेकिन असुरता का जो नंगा नाच चारों ओर दिखाई देता है, संसार में अशांति, अभाव, अत्याचार का जो साम्राज्य छाया है उसे देखते हुए तो यही कहा जा सकता है कि बड़े-बड़े शासनाध्यक्षों, बुद्धिजीवियों, कलाकारों, पूँजीपतियों, वैज्ञानिकों के मन-मस्तिष्क में रावण ने ही आधिपत्य जमाया हुआ है। धन-कुबेरों में जब शोषण एवं दमन के मार्ग पर चलकर सम्पदा बटोरने की हवस दिखाई दे तो उन्हें क्या कहा जाय? एक ओर लोगों के घरों से अवैध कमाई के करोड़ों-अरबों रुपये जब्त हो रहे हैं तो दूसरी ओर लाखों लोग भूख से दम तोड़ते दिखाई देते हैं। अंधाधुंध वैभव की चाह ने नारी की अस्मिता से खिलवाड़ कर उसे विज्ञापन की वस्तु बना दिया गया है। कला के नाम पर कामुकता को बेरोकटोक प्रोत्साहन मिल रहा है। ऐसी परिस्थितियाँ मनुष्यता को मार चुके संवेदनहीन लोगों की वजह से ही पनपती हैं। संवेदना, सदाचार के अभाव एवं लोभवश बने भय और अविश्वास के कारण युद्धोन्माद में जितने धन-साधन बर्बाद हो रहे हैं, उनसे एक नई सतयुगी दुनिया बसाई जा सकती थी।

अंतर्मन का देवासुर संग्राम

राम और रावण थोड़े-बहुत अंशों में हर व्यक्ति में विद्यमान रहते हैं। हृदय कमल में विराजमान श्रीराम नीति, धर्म, अनुशासन, मर्यादाओं को अपनाने की प्रेरणा देते रहते हैं, लेकिन बुद्धि में बैठा रावण मायावी शूर्पणखा के सहारे अंतर्मन की पुकार को, हृदय से उठती रामरूपी सत्प्रेरणाओं को तमाम तरह के आकर्षण रूपी सोने के हिरण के पीछे कहीं दूर भेजकर अनैतिकतापूर्वक संस्कृति की सीता का अपहरण कर लेता है। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार, नारी का अपमान आदि पाप इसी के परिणाम हैं।

यह देवासुर संग्राम हर व्यक्ति के जीवन में हर पल चलता ही रहता है। जैसे घर को प्रतिदिन बुहारा जाता है, जैसे बही-खातों का वार्षिक लेखा-जोखा रखा जाता है, लाइसेंस का नवीनीकरण जरूरी होता है, उसी प्रकार 'मानवता' की रक्षा और 'देवत्व' के अभिवर्धन के लिए सतत प्रयासों की आवश्यकता होती है। देव संस्कृति के पोषक मनोवैज्ञानिक ऋषियों ने इसी प्रयोजन के लिए दैनिक पूजा-पाठ, सेवा-साधना, व्रत-उपवास, पर्व-त्यौहार आदि का प्रचलन किया। यह धार्मिक कार्यक्रम मन में पनपती असुरता को हटाने, मिटाने और देवत्व का अभिवर्धन करने वाले सद्गुणों के प्रति आस्था बढ़ाने के लिए ही किये जाते हैं। यह मानवीय मन में विद्यमान अवगुणों को हटाकर उदात्त आदर्शों के प्रति आस्था संवर्धन के विशिष्ट प्रयोग हैं।

दीपावली : प्रयोजन और परम्परा

दीपावली मन में सत्प्रवृत्ति संवर्धन का एक महान पर्व है। कथा है कि भगवान राम जब रावण पर विजय प्राप्त कर कार्तिक अमावस्या के दिन अयोध्या लौटे थे, तब नगरवासियों ने अपने घरों को आकर्षक ढंग से सजाकर एवं दीपमालाएँ जलाकर उनका भव्य स्वागत किया था। तब से असुरता पर विजय और रामराज्य की स्थापना का यह पर्व दीवाली हर वर्ष बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

रावण को परास्त कर और संस्कृति स्वरूपा माता सीता को असुरता के आतंक से मुक्त कर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम अयोध्या लौट आए और अयोध्या में रामराज्य की स्थापना हुई। रामराज्य का तात्पर्य है सबके प्रति प्रेम, सद्भाव और सम्मान, परस्पर हितों की रक्षा, मर्यादित आचरण, अनुशासित जीवन, विवेकपूर्ण विचार और व्यवहार, ऊँचे उद्देश्यों के लिए उत्सर्ग की भावना, पारिवारिक सुख-शान्ति एवं सामाजिक जीवन में स्वच्छता, सुव्यवस्था, सदाशयता आदि। दीपावली पर्व अपने व्यक्तित्व की तमाम बुराइयों से संघर्ष करते हुए इन उत्कृष्ट जीवन मूल्यों को अपनाने व अपनी संस्कृति के प्रति आस्था को प्रगाढ़ करने की प्रेरणा देता है।

वस्तुतः मानव में देवत्व के जागरण का विशेष अनुष्ठान आश्विन शुक्ल प्रतिपदा (नवरात्र आरम्भ) से ही आरम्भ हो जाता है। इन दिनों अनेक स्थानों पर रामलीलाओं का मंचन होता है। रामचरितमानस का पाठ, गायत्री मंत्र जप अनुष्ठान, दुर्गा सप्तशती का पाठ, दुर्गापूजा या अन्य देवी-देवताओं के अनुष्ठान अंतर्मन की मलिनताओं का शमन कर मानव मन में देवत्व के जागरण के लिए ही तो किए जाते हैं।

विजया दशमी के दिन रावण दहन की परम्परा सदियों से चली आ रही है। लेकिन सामाजिक जीवन में होता उल्टा ही दिखाई दे रहा है। हर वर्ष कागज का रावण जल जाता है, लेकिन आसुरी प्रवृत्तियाँ कम नहीं हो रहीं, बल्कि असुरता का आतंक दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है। ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि केवल पर्व आयोजन की परम्परा ही न निभाई जाए, उसके प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए प्रभावशाली प्रयास भी किए जाएँ।

विजयादशमी के बाद से घर की साफ-सफाई, रंगाई-पुताई का सिलसिला शुरू होता है। दीपावली के अवसर पर घर के बाहर रंगोली सजाना, घर की सज्जा, दीप जलाना, मिठाइयाँ बनाना, नए वस्त्र, पूजा-पाठ सबका उद्देश्य एक ही है-अवांछनीयताओं, तरह-तरह के विकारों व दुष्प्रवृत्तियों को दूर कर सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन का उत्सव मनाना, जैसा कि भगवान राम के वन से लौटने के बाद अयोध्या वासियों ने मनाया था।

अंतश्चेतना में दीप जलायें

दीपक स्वयं में अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। यह प्रतीक है ज्ञान का, उल्लास का। जहाँ दीप-ज्योति प्रकाशित है वहाँ अँधेरा टिक नहीं सकता। जब भगवान राम अयोध्या लौटे तो अमावस की काली अँधेरी रात को जगमगा देने वाली दीप मालाएँ ही प्रज्वलित नहीं हुईं, बल्कि भगवान राम की दिव्य चेतना के स्पर्श से अयोध्या वासियों के अंतःकरण में आस्था के दीप भी आलोकित हो उठे होंगे। उनके मन से हताशा, निराशा, कुंठा, भय आदि सारी नकारात्मकता तिरोहित हो गई होगी। तभी तो रामराज्य की स्थापना हुई। आज जन-जन के मन में आस्था के ऐसे ही दीप जलाकर दीवाली मनाने की आवश्यकता है। परम्पराओं के स्थान पर विवेक को स्थान दिये जाने की आवश्यकता है।

बल्बावली नहीं, दीपावली :
पूजा की वेदी पर जब दीपक जलता है तो मन में एक अलौकिक उल्लास की अनुभूति होती है। आज तो दीपावली का स्थान बल्बावली ने ले लिया है। विद्युत के बल्बों से घरों की शोभा होने लगी है। लेकिन इन बल्बों के जलने से मन में वैसा ही भक्तिभाव कहाँ उभरता है? बल्बों के जलने से मन भगवान के श्रीचरणों में कहाँ नतमस्तक होता है? उलटे इन विद्युत के बल्बों की चकाचौंध लोगों को भौतिकता की ओर ही आकर्षित करती है। एक-दूसरे से बेहतर सज्जा की होड़ में मन में अहंकार ही तो पनपता है। अच्छा हो कि बल्बावली की जगह दीये जलाकर ऐसी दीपावली मनाई जाए जो परमात्मचेतना के प्रति जन-जन के मन में आस्था बढ़ाए।

लक्ष्मी-गणेश का पूजन :
भौतिकतावादी समाज में अब दीपावली को 'लक्ष्मी-गणेश पूजन' के पर्व के रूप में अधिक मान्यता मिलने लगी है। यदि सही मायनों में लक्ष्मी और गणेश जी का पूजन भी किया जाये तो धन-साधनों के उपार्जन में विवेक, औचित्य और मर्यादाओं का ध्यान भी रखा जाने लगेगा। लक्ष्मी-गणेश पूजन का अर्थ है लक्ष्मी जी के स्वामी नहीं, सेवक बनकर उनका मान बढ़ाना। 'सादा जीवन-उच्च विचार' की नीति को अपनाते हुए सबके हित में अपना हित समझना। संत-महापुरुषों का जीवन इस रीति-नीति पर आधारित होता है। परम पूज्य गुरुदेव ने 'अपनी रोटी मिल-बाँटकर खाओ।' का सूत्र दिया है। लेकिन आजकल तो 'पूजन' का भाव तिरोहित होकर लक्ष्मी को बटोरने तथा उसका उपभोग करने की मानसिकता विकसित होती जा रही है। इस पर विराम लगाने की आवश्यकता है। लक्ष्मी पूजन के समय बही-खातों का पूजन धन के सदुपयोग की ही प्रेरणा देता है।

नारी के सम्मान का भाव बढ़े
लक्ष्मी पूजन की प्रेरणा यह भी है कि हम शक्ति-स्वरूपा नारी का सम्मान करें, उसे उसकी गरिमा के अनुरूप विकसित होने का अवसर प्रदान करें। आज विज्ञापनों और चलचित्रों में दिखाई देने वाला नारी का फूहड़ रूप अपनी सनातन संस्कृति और संस्कारों के अनुरूप ढले, ऐसे प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। नारी के सम्मान और सुरक्षा के संकल्प उभारे जायें। स्वयं देवी स्वरूपा नारियों को भी अपनी सनातन सांस्कृतिक गरिमा का ध्यान रखते हुए मन में कुत्सा और कामुकता को प्रोत्साहित करने वाले स्वरूप से परहेज करने के संकल्प दीपावली के पावन अवसर पर लेने की आवश्यकता है।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता
पर्यावरण प्रदूषण के कारण दुनिया के विनाश की बात अब सिर्फ चर्चा का विषय नहीं रही, उसका स्पष्ट अनुभव भी होने लगा है। धरती का बढ़ता तापमान, बदलता मौसम, असमय वर्षा, बाढ़, सूखा जैसी परिस्थितियाँ वीभत्स होती जा रही हैं। प्रसन्नता की बात है कि इन परिणामों को देखते हुए पर्यावरण के प्रति लोगों में कुछ-कुछ जागरूकता बढ़ी है।

पटाखे चलाकर दीपावली का उत्सव मनाना स्वास्थ्य, धन और पर्यावरण सभी दृष्टि से घातक है। पहले से ही दूषित पर्यावरण में पटाखे चलाना श्वास के जटिल रोगों को जन्म देता है। भारत जैसे गरीब देश में पटाखों को न जलाकर बचे हुए धन को गरीबों के उत्थान में लगाया जा सके, तो मन को अधिक सुकून मिल सकता है। सरकार की तरफ से इस पर अंकुश लगाया जा रहा है, लेकिन लोगों में भी स्वेच्छा से पटाखों से परहेज के संकल्प उभरने चाहिए।

सांस्कृतिक गौरव की अनुभूति हो
राम, कृष्ण, गौतम और प.पू. गुरुदेव-परम वंदनीया माताजी के इस देश ने एक से बढ़कर एक जीवन आदर्श प्रस्तुत किए हैं। उनके प्रति आस्था बढ़े, ऐसे प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। अध्यात्म की उपेक्षा कर भौतिकता का अंधानुकरण करती युवा एवं प्रौढ़ पीढ़ी निःसंदेह चिन्ता का विषय है।

पाश्चात्य सभ्यता से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। स्वच्छता, सुंदरता, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, अनुशासन जैसे अनेक विषय हैं, जिनका समावेश हमें अपने जीवन में करना चाहिए; लेकिन इस जीवन शैली की अपार हानियाँ भी हैं, जिनके विषय में सोचना और अंधानुकरण करने से बचना चाहिए।

पारिवारिक पर्यटन
दीपावली का समय आत्मीयता संवर्धन की दृष्टि से बहुत उपयुक्त होता है। उत्सव और उल्लास के इस स्वर्णिम काल में पारिवारिक गोष्ठियाँ आयोजित कर जीवन में सरसता, परस्पर प्रेम बढ़ाने के प्रयास किए जा सकते हैं। गायत्री परिवार के सदस्यों द्वारा भी मण्डल, गाँव, नगर स्तर की गोष्ठियाँ या पिकनिक-पर्यटन के कार्यक्रम आयोजित कर जीवन के उदात्त आदर्शों के प्रति आस्था के भाव बढ़ाये जा सकते हैं।

आदर्शों के अनुसरण के संकल्प
भगवान राम ने अपने अदम्य साहस, प्रचण्ड संकल्प एवं मुट्ठीभर साथियों के बल पर देवताओं के लिए भी अजेय रावण का वध किया था। हम सही मायनों में रामभक्त हैं तो हमें भी अपने जीवन की बुराइयों पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी के साथ जीवन जीते हुए भय, भेद, भ्रष्टाचार, आतंक, अनाचार के मार्ग को छोड़ने के संकल्प लेने चाहिए।

सद्ज्ञान का प्रकाश फैलायें
उत्कृष्टता की ओर अग्रगमन का सर्वोत्तम माध्यम है ज्ञानदीप जलाना। ज्ञान ही सर्वोत्तम धन है। आत्मज्ञान के प्रकाश में जीवन की बुराइयाँ टिक नहीं सकतीं। आज लाखों-करोड़ों लोगों के जीवन में ऐसे ज्ञानदीप प्रकटाने की आवश्यकता है। युगदेवता ने ऐसी ज्योतित आत्माओं के संगठन से नवयुग सृजन का आह्वान किया है। जहाँ भी ऐसे ज्योतित अंतःकरण वाले लोगों का समाज होगा, वहाँ रामराज्य की स्थापना सुनिश्चित है। दीपावली के शुभ अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव के क्रान्तिकारी विचारों के माध्यम से लोगों के मन में सद्ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न हो, ऐसे प्रयास हम सबको करने चाहिए। ***

नवचेतना जागरण गायत्री महायज्ञों की देशव्यापी शृंखला आरम्भ

शान्तिकुञ्ज में आयोजित पाँच दिवसीय राष्ट्रीय पुनर्बोध शिविर के उपरांत 1 अक्टूबर 2022 से 8 टोलियाँ रवाना हुईं। ये टोलियाँ देशभर में नवचेतना जागरण गायत्री महायज्ञों का संचालन करेंगी।

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में 20 से 24 सितम्बर की तिथियों में पाँच दिवसीय राष्ट्रीय पुनर्बोध शिविर आयोजित हुआ। यह शिविर नारी सशक्तीकरण वर्ष में शारदीय कार्यक्रमों की शृंखला में जाने वाली टोलियों के प्रशिक्षण-पुनर्बोध हेतु आयोजित किया गया था, जिसमें शान्तिकुञ्ज एवं देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए लगभग 200 कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया।

गायत्री विद्यापीठ, शान्तिकुञ्ज की व्यवस्था मण्डल प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या, डॉ. गायत्री शर्मा, श्री शिवप्रसाद मिश्रा ने दीप प्रज्वलन कर शिविर का शुभारंभ किया। उद्घाटन सत्र में श्रीमती शेफाली पण्ड्या ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव के अनुसार नारी समाज की धुरी है, विश्व मानवता का भविष्य नारी ही रचेगी। हमें बहिनों के युगसृजेता वाले व्यक्तित्व को उभारना होगा। समाज को ऐसी नारीशक्ति की जरूरत है जो अंधविश्वास, मूढ़मान्यताओं से मुक्त हो, श्रद्धा, संवेदना, करुणा, ममता से युक्त हो तथा अन्याय के विरुद्ध खड़ी दिखाई दे।

समापन सत्र में टोलियों को विदाई देते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि आज समय पुकार रहा है कि जाग्रत् आत्माएँ आगे बढें, समाज का मार्गदर्शन करें। देश को ईमानदारी और जिम्मेदारी के साथ संगठित और सशक्त करने वाली युवाशक्ति की आवश्यकता है।

श्रद्धेया शैल जीजी ने अपने विदाई संदेश में कहा कि यह राष्ट्र के अभ्युदय की वेला है। हमें परम वन्दनीया माताजी की जन्म शताब्दी तक युगसृजेताओं की एक विशाल खेप समाज को समर्पित करनी है। परम पूज्य गुरुदेव की विचार संजीवनी जाग्रत् आत्माओं में नवप्राणों का संचार करेगी।

पाँच दिनों तक हुए विचार मंथन में व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा जी ने लोकसेवियों की आचार संहिता की चर्चा की। कार्यक्रम का समन्वय कार्यक्रम विभाग प्रभारी श्री श्याम बिहारी दुबे की टोली ने किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी शिविर के समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए

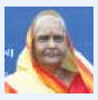

परम पूज्य गुरुदेव की विचार संजीवनी जाग्रत् आत्माओं में नवप्राणों का संचार करेगी। -श्रद्धेया शैल जीजी

नारी समाज की धुरी है, विश्व मानवता का भविष्य नारी ही रचेगी।
- आदरणीया शेफाली पण्ड्या

देश को ईमानदारी और जिम्मेदारी के साथ संगठित और सशक्त करने वाली युवाशक्ति की आवश्यकता है।
- आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या

गायत्री परिवार मलेशिया ने योग शिविर का आयोजन किया

भारतीय उच्चायोग, मलेशिया के सहयोग से आयोजित हुआ कार्यक्रम

योग शिविर का संचालन कर रहे गायत्री परिवार के समर्पित कार्यकर्त्ता

कुआलालम्पुर। मलेशिया

गायत्री परिवार मलेशिया द्वारा राजधानी कुआलालम्पुर में 17 सितम्बार 2022 को योग सम्बन्धी एक विशेष आयोजन सम्पन्न किया गया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीय सांस्कृतिक केंद्र (NSCBICC) में आयोजित यह कार्यक्रम भारतीय उच्चायोग, मलेशिया के सहयोग से आयोजित किया गया था। शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्री गौरीशंकर सैनी की विशेष उपस्थिति रही। समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती बेनो जेफीन, प्रथम सचिव-सूचना, राजनीतिक एवं नीति, भारतीय उच्चायोग मलेशिया थीं।

श्रीमती जेफीन ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में गायत्री परिवार के द्वारा किये जा रहे सामाजिक कार्यों की प्रशंसा की। NSCBICC में योग प्रशिक्षक श्री संदीप वानखेड़े ने विभिन्न प्रकार के योगासनों का अभ्यास कराया। 75 से अधिक प्रतिभागियों ने बड़े ही उत्साह के साथ योगाभ्यास किया।

डॉ. अवनीश शुक्ला ने कुशल मंच संचालन करते हुए योगाभ्यासियों को दैनिक जीवन में योग को शामिल करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम की समाप्ति पर युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित युग साहित्य का वितरण किया गया। NSCBICC के पुस्तकालय में यह साहित्य स्थापित किया गया। मलेशिया गायत्री परिवार के परिजन सर्वश्री सूर्य प्रताप सिंह, श्री कुमार संभव, श्री नवीन सैनी एवं श्री हेमंत जी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अथक सहयोग दिया।

अविस्मरणीय आयोजन के प्रमुख सहयोगी

सुश्री अमृता दास-परामर्शदाता (सामुदायिक मामले और श्रम, मलेशिया), माननीय श्री बी.एन. रेड्डी-भारतीय उच्चायुक्त, रम्या हिरियान्नैया-NSCBICC के निदेशक तथा सुश्री पद्मिनी जी (अमृता जी की सहयोगी)।

पितृपक्ष में शान्तिकुञ्ज में हजारों लोगों ने श्राद्ध-तर्पण किया

लगभग 10 हजार लोगों को वृक्षारोपण और जलस्रोतों की स्वच्छता की प्रेरणा दी, संकल्प कराए

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज अपनी अद्वितीय संस्कार परम्परा के लिए पूरे देश में अत्यंत लोकप्रिय है। इसी जनआस्था के प्रभाव से सर्वपितृ मोक्ष अमावस्या के दिन शान्तिकुञ्ज में हजारों श्रद्धालुओं ने अपने पितरों-पूर्वजों का श्राद्ध, तर्पण, पिण्डदान संस्कार किया। इसके अलावा पितृपक्ष में प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में श्राद्ध-तर्पण संस्कार हुए। सभी श्रद्धालुओं ने देश की रक्षा करते हुए दिवंगत हुए सैनिकों, विभिन्न आपदाओं एवं दुर्घटनाओं में दिवंगत आत्माओं की शांति एवं सद्गति के लिए प्रार्थना की।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने इस संस्कार को अत्यंत पुण्यदायी बताया। उन्होंने कहा कि श्राद्धकर्म के पश्चात् पौधे रोपने से इसका फल कई गुना बढ़ जाता है। पितरों के लिए किया गया श्राद्ध उन्हें तो तृप्ति प्रदान करता ही है, हमारे मनों में अपने अभिभावकों के लिए प्रेम और संवेदनाएँ भी जगाता है। श्रद्धेय की इन्हीं भावनाओं के अनुरूप शान्तिकुञ्ज में श्राद्ध-तर्पण करने वाले सभी श्रद्धालुओं को वृक्षारोपण और जलाशयों की स्वच्छता करने या बनाये रखने के संकल्प कराए गए।

पावन युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में पितरों को श्रद्धांजलि देते पूरे देश से आए हुए श्रद्धालु

जिले में चल रहा एक सफल आन्दोलन आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी

अलवर। राजस्थान

हर सप्ताह होते हैं 2 से 3 सामूहिक गर्भ संस्कार समारोह।
प्रत्येक में औसतन 30 से 50 बहिनों का होता है गर्भ संस्कार

अलवर जिले में शिशुओं के समग्र विकास में गायत्री परिवार की प्रेरणाओं का भरपूर स्वागत हो रहा है। विगत पाँच वर्षों से स्त्री रोग विशेषज्ञ चिकित्सकों, विभिन्न अस्पतालों, आँगनबाड़ी कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' कार्यक्रम ने एक आन्दोलन का रूप ले दिया है।

दिनांक 15 सितम्बर 2022 को अलवर में दिवाकरी आँगनबाड़ी केन्द्र पर डॉ. सरोज गुप्ता, श्रीमती प्रतिभा सिंह एवं श्रीमती मंजू चौहान ने 29 गर्भवती महिलाओं का और रंगभरियों की गली मालाखेडा बाजार में श्रीमती ज्ञान देवी शर्मा, श्रीमती आशा तिवारी एवं श्रीमती उर्मिला शर्मा ने 18 गर्भवती महिलाओं का पुंसवन संस्कार गायत्री यज्ञ के साथ कराया।

जिले में प्रति सप्ताह दो या तीन स्थानों पर सामूहिक पुंसवन संस्कार के कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं, जिनमें 30 से 50 बहिनों के पुंसवन संस्कार सम्पन्न होते हैं। इन कार्यक्रमों में संस्कार के कर्मकाण्ड के साथ उपस्थित लोगों को गर्भ-विज्ञान की विस्तृत जानकारी दी जाती है।

लोकप्रियता की पृष्ठभूमि

शाखा प्रतिनिधि श्री सतीश सारस्वत के अनुसार अलवर में विगत दिनों दो बड़ी कार्यशालाएँ हुईं। अलवर के आई.एम.ए. हॉल में आयोजित विशेष कार्यशाला में अलवर नगर के चिकित्सकों के साथ-साथ जबलपुर, इंदौर, गुरुग्राम और शान्तिकुञ्ज के विशेषज्ञों ने अपने विचार रखे। स्थानीय चिकित्सक एवं कार्यकर्त्ताओं पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा।

17 जुलाई 2022 को अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली के गायत्री परिवार के एक हजार से अधिक परिजनों की कार्यशाला हुई। इन कार्यक्रमों के बाद आन्दोलन को जोरदार गति मिली।

अलवर में सामूहिक पुंसवन संस्कार कराती वरिष्ठ चिकित्सक कार्यकर्त्ता बहिन

गायत्री तपोभूमि, मथुरा में मातृशक्ति सम्मेलन सम्पन्न

मथुरा। उत्तर प्रदेश

गायत्री तपोभूमि, मथुरा के पावन परिसर में 2 से 4 सितंबर, 2022 की तिथियों में मातृशक्ति सम्मेलन संपन्न हुआ। इसमें देश-विदेश से आईं लगभग 1000 प्राणवान, श्रद्धावान कार्यकर्त्ता बहिनों की सक्रिय भागीदारी रही। 'नारी सशक्तीकरण वर्ष' के उपलक्ष्य में आयोजित इस विशेष सम्मेलन का संयोजन सुश्री वंदना शर्मा ने किया।

आदरणीय श्री मृत्युंजय शर्मा जी एवं आदरणीया श्रीमती निर्मल शर्मा जी ने दीप प्रज्वलन कर मातृशक्ति सम्मेलन का विधिवत उद्घाटन किया। विभिन्न क्षेत्रों से आईं अपने विषय की मर्मज्ञ बहिनों के नारी जागरण, नारी सशक्तीकरण एवं नारी सक्रियता सम्बन्धी अनेक विषयों पर उद्बोधन हुए। सभी को विभिन्न आन्दोलनों को गति देने की प्रेरणा दी गई। मंत्र लेखन की हस्तलिखित पुस्तिकाएँ सिर पर धारण कर जयघोष करते हुए यात्रा निकाली गई। अंतिम दिन विदाई संदेश में आदरणीया श्रीमती निर्मल शर्मा जी ने अतिथि बहिनों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह आपका मायका है, आप जब भी यहाँ आएँगी, तब आपकी भाभी आपके स्वागत के लिए दरवाजे पर आपका इंतजार करेगी।

- मल्टीमीडिया की बड़ी स्क्रीन पर 'महाशक्ति की लोकयात्रा' वीडियो प्रदर्शन द्वारा वंदनीया माताजी के जीवन पर प्रभावशाली ढंग से प्रकाश डाला गया।
- 21 बहनों ने एक साथ शंखध्वनि करके 'इक्कीसवीं सदी नारी सदी' का शंखनाद किया।
- जुलाई, 2022 में प्रकाशित युग निर्माण योजना मासिक के विशेषांक 'मातृशक्ति विशेषांक' की अतिरिक्त प्रतियाँ शिक्षित महिलाओं तक पहुँचाने का प्रबल प्रयास किया।
- प्रतिभागी बहिनों को नारी जागरण साहित्य की 37 पुस्तकों का एक सेट 'मातृशक्ति जागरण सेट' (आधा मूल्य डाकखरच सहित 200 रुपए मात्र) उपलब्ध कराया गया। जो बहनें इस सम्मेलन में किसी कारण न आ सकीं, वे भी ये सेट आधे मूल्य पर मँगाकर अपने क्षेत्र में पात्र बहिनों को पढ़ा सकती हैं।

पितृपक्ष में हुए सामूहिक संस्कारों में श्रद्धा-संवेदना का संचार, सत्प्रवृत्तियों का विस्तार

हैदराबाद (तेलंगाना)

बरघाट, सिवनी (मध्य प्रदेश)

देवास (मध्य प्रदेश)

बारां (राजस्थान)

6000 गायों के लिए डेढ़ लाख के चारे का दान

हैदराबाद। तेलंगाना

गायत्री परिवार हैदराबाद के द्वारा सर्वपितृ अमावस्या के दिन सामूहिक तर्पण, पिण्डदान एवं गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया। हैदराबाद की कामधेनु गोशाला जियागुडा के दिव्य प्रांगण में आयोजित इस संस्कार समारोह में लगभग 250 लोगों ने बड़ी श्रद्धा के साथ भाग लिया। उल्लेखनीय है कि इस गोशाला में कत्ल खाने जाने से बचायी हुई 6000 गायें पल रही हैं।

प्रतिभागी परिजनों ने अपने पितरों का तर्पण करते हुए लगभग ₹1, 51,000/- की धनराशि का चारा गायों के लिए दान किया। इस धनराशि से 3 ट्रॉली कुट्टी डाली जाएगी, जो 6000 गायों के लिए दो दिन के लिए पर्याप्त होगी। पितरों के प्रति श्रद्धा के साथ जीवदया के भाव जगाने वाले इस कार्यक्रम की सफलता में गायत्री परिवार हैदराबाद के सर्वश्री गोकुल चंद उपाध्याय, विनोद चौरसिया आदि गणमान्यों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। प्रज्ञापीठ की पूरी टीम का उत्साह देखते ही बनता था।

बरघाट, सिवनी। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बरघाट में पितृ मोक्ष अमावस्या के अवसर पर आयोजित सामूहिक श्राद्ध-तर्पण संस्कार समारोह में नगर एवं ग्रामीण अंचल से आए डेढ़ सौ से अधिक परिजनों ने भाग लिया। युग संस्कार पद्धति के प्रति निष्ठावान इन श्रद्धालुओं ने तर्पण-पिण्डदान की विस्तृत प्रक्रिया में भाग लेते हुए तृप्ति एवं संतोष की अनुभूति की, अपने पितरों की शान्ति-सद्गति के लिए प्रार्थना की। पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ में पितरों के निमित्त विशिष्ट आहुतियाँ प्रदान की गईं। श्री हेमराज बघेल द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया।

देवास। मध्य प्रदेश

पितृ पक्ष में गायत्री शक्तिपीठ साकेत नगर एवं गायत्री प्रज्ञापीठ विजयनगर पर सामूहिक तर्पण, पिंडदान एवं पितृ यज्ञ के कार्यक्रम आयोजित हुए। गायत्री शक्तिपीठ पर चन्द्रिका शर्मा एवं गायत्री प्रज्ञापीठ पर ज्ञानदेव बोडखे ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए जीवात्मा की अनन्त यात्रा का दर्शन समझाया। उन्होंने पर्व की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्राद्धपक्ष दिवंगत आत्मा की तृप्ति के लिए शुभकर्म करने का संकल्प-पर्व हैं। हमारे शुभकर्मों से तृप्त होकर उसका भावी जीवन श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होता है।

गायत्री प्रज्ञापीठ विजय नगर पर आयोजित कार्यक्रम में सुश्री दुर्गा समधिया जी के सानिध्य में सम्पन्न हुए कार्यक्रम में 48 भाईयों एवं 13 बहिनों ने भाग लिया। कार्यक्रम में शेष नारायण परमार, मदनगोपाल श्रीवास्तव, राजेश भारद्वाज, अनुराधा सोनी, कमला गोयल, प्रकाश दुबे, सुभाष धोटे, दिनेश बरडे आदि का सराहनीय योगदान रहा।

सामाजिक दायित्वों का बोध कराया

बारां। राजस्थान

'दिया' बारां द्वारा आज सर्वपितृ अमावस्या के शुभ अवसर पर मनिहारा महादेव तालाब पर प्रातः निःशुल्क श्राद्ध-तर्पण संस्कार सम्पन्न करवाया गया। बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी से वातावरण बड़ा ही दिव्य और श्रद्धा-संवेदनाओं से ओतप्रोत हो गया था। लोगों ने अपने पितरों के साथ देव तर्पण, ऋषि तर्पण, दिव्य मानव तर्पण, भीष्म तर्पण आदि विशिष्ट क्रियाओं को करते हुए अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने पर गौरव की अनुभूति की। डॉ. मुकेश कुमार मीणा ने बताया कि उनकी शाखा पर्यावरण संरक्षण-वृक्षारोपण के लिए समर्पित है। सभी तर्पण कर्त्ताओं ने भी पूर्वजों की स्मृति में वृक्षारोपण किया गया।

200 लोगों ने किया संस्कार वाचनालय का लोकार्पण

चित्तौड़गढ़। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ पर सर्वपितृ अमावस्या के दिन आयोजित सामूहिक तर्पण कार्यक्रम में तीन पारियाँ हुईं, लगभग 200 श्रद्धालुओं ने ऋषि तर्पण, देव मानव तर्पण, श्रीराम तर्पण, मानव तर्पण आदि 6 प्रकार के तर्पण के साथ अपने पितरों को याद किया। तर्पण करने वाले श्रद्धालुओं को अपने पूर्वजों की याद में वृक्षारोपण करने, गोशाला में लम्पी वायरस से ग्रसित गौ माता के उपचार में सहयोग करने एवं अन्य लोकोपयोगी कार्यों में अपनी कमाई का एक अंश समर्पित करने का संकल्प दिलाया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री जगदीश जोशी, श्री रमेश चन्द्र पुरोहित एवं श्री दयाराम ने किया। शक्तिपीठ पर युग निर्माण वाचनालय का उद्घाटन भी किया गया।

पितरों के उपकारों का स्मरण कराया

हनोदा, दुर्ग। छत्तीसगढ़

दुर्ग के निकटवर्ती ग्राम हनोदा के गायत्री ज्ञान मंदिर में सामूहिक पितृ तर्पण संस्कार का आयोजन हुआ। बड़ी संख्या में लोगों ने पितरों के निमित्त श्राद्ध, तर्पण और पिंड दान के उपरांत गायत्री यज्ञ किया। पितरों की उत्तम गति के लिए विशेष प्रार्थना की गई। स्थानीय कार्यकर्त्ता श्री देवी प्रसाद साहू ने पितरों के उपकारों का स्मरण कराते हुए उनके प्रति श्रद्धा के भाव उभारे। सभी ने अपने पितरों के नाम से वृक्षारोपण कर उसकी देख-रेख करने का संकल्प लिया।

अपने शुभकर्मों से पितरों को तृप्ति प्रदान करें

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

सर्वपितृ अमावस्या के दिन गायत्री शक्तिपीठ पर सामूहिक श्राद्ध-तर्पण संस्कार सम्पन्न हुआ। नगर के 70 श्रद्धालुओं ने इसमें भाग लिया। शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री संतोष वर्मा ने पितरों के प्रति श्रद्धा के भाव उकेरते हुए कहा कि पितरों ने अपने जीवन काल में जो शुभ आकांक्षाएँ की थीं, उन्हें पूरा होते देखकर उनकी आत्मा तृप्त होती है। अतः हमें श्राद्ध-तर्पण के साथ उनकी आत्मा की शान्ति के लिए लोकमंगल के कार्यों में अवश्य भाग लेना चाहिए। श्री भूर सिंह भिण्डे ने यह संस्कार सम्पन्न कराया।

बैतूल। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ सिविल लाइंस में मातृ नवमी के अवसर पर सामूहिक तर्पण का विशेष आयोजन किया गया। हिन्दू धर्म में इस दिन परिवार की सभी दिवंगत माता-बहिनों का श्राद्ध, तर्पण, पिण्डदान किया जाता है। श्री हरवंश आहूजा के अनुसार विशुद्ध लोकमंगल के लिए समर्पित गायत्री परिवार की निःशुल्क संस्कार परम्परा के प्रति अपनी आस्था दर्शाते हुए उस दिन 50 परिजनों से सामूहिक तर्पण में भाग लिया। श्री रोशनलाल पटैया एवं श्री बसंत साकरे ने संस्कार सम्पन्न कराया।

श्रद्धालुओं के लाभार्थ स्वच्छता अभियान

जतारा, टीकमगढ़। मध्य प्रदेश

जतारा का दिनऊ मंदिर क्षेत्र धार्मिक आयोजनों के लिए विख्यात है। मंदिर के पास स्थित तालाब पर विविध धर्मानुष्ठान होते रहते हैं। पितृ पक्ष में लोग तालाब के तट पर श्राद्ध-तर्पण के लिए पहुँचते हैं। लेकिन वर्षाऋतु में वे घाट गंदे हो गए और मिट्टी से भर गए थे। गायत्री परिवार के युवा प्रकोष्ठ ने इस स्थिति को देखते हुए 11 सितम्बर-रविवार के दिन तालाब के घाटों पर सामूहिक स्वच्छता अभियान चलाया, उन्हें स्वच्छ-सुन्दर बनाया।

श्री मदन समेले ने बताया कि गायत्री परिवार के युवाओं की एक बड़ी टीम ने 2-3 घण्टे तक घाटों पर पसीना बहाया।

चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

हनोदा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

अलीराजपुर (मध्य प्रदेश)

जतारा, टीकमगढ़ : तर्पण स्थल की सफाई करते परिजन

वहाँ से मिट्टी, पत्थर के साथ गुटके व शैम्पू के पाउच, गली-सड़ी पूजन सामग्री हटाई, ताकि श्राद्ध करने वालों को असुविधा न हो। उन्होंने लोगों से घाटों को साफ-सुथरा बनाए रखने की अपील भी की।

हिन्दी दिवस मनाया, शोभायात्रा भी निकाली

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार द्वारा संचालित जिले की प्रतिष्ठित पाठशाला गायत्री विद्यापीठ में 'हिन्दी दिवस-14 सितंबर' के उपलक्ष्य में हिन्दी सप्ताह मनाया गया। इसके अंतर्गत कक्षा 4 से 12वीं तक के विद्यार्थियों के बीच कविता कथन, 'हिन्दी दिवस की सार्थकता' विषय पर भाषण, श्रुति लेखन, वाद-विवाद जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ।

हिन्दी सप्ताह का शुभारंभ कक्षा 4 एवं 5 के विद्यार्थियों द्वारा 'हिन्दी दिवस रैली' के साथ हुआ। शाला की प्राचार्य श्रीमती वत्सला अय्यर ने हिन्दी विषय को रोचक एवं प्रभावी बनाने हेतु मार्गदर्शन दिया। हिन्दी दिवस के कार्यक्रमों में आजादी के अमृत महोत्सव का उत्साह बना रहा। शाला की प्राचार्य श्रीमती वत्सला अय्यर के मार्गदर्शन में सम्पूर्ण आयोजन संपन्न करवाए गए।

गायत्री विद्यापीठ के विद्यार्थियों द्वारा निकाली गई रैली और उसके समापन पर बच्चों में झलकता उत्साह

पितृपक्ष : मरीजों के साथ साझा की संवेदनाएँ

दिया के सदस्यों ने शांति अवेदना सदन की बांद्रा स्थित धर्मशाला का दौरा

बीमार बच्चों के संग वृक्षारोपण करते कार्यकर्त्ता

मुम्बई। महाराष्ट्र : शांति (शांति) अवेदना (दर्द की अनुपस्थिति) सदन (घर) भारत की पहली धर्मशाला है, एक संस्था जो उन्नत रूप से बीमार कैंसर और एचआईवी एड्स के रोगियों की देखभाल करती है। 'दिया' मुम्बई की टीम ने पितृ पक्ष में पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में शांति अवेदना सदन की बांद्रा स्थित धर्मशाला का दौरा किया। टीम ने इस संस्थान को जीवन के लिए आवश्यक वस्तुएँ प्रदान कीं। इसके अलावा सभी भर्ती मरीजों की भलाई के लिए प्रार्थना की। मरीजों की सेवा में संलग्न सिस्टर एन्सी कोट्टुपल्लिल को स्वास्थ्य लाभ में यज्ञ विज्ञान की जानकारी दी। इस प्रवास का प्रबंधन दिया शुचिता शेट्टी और रितेश ने किया था।

गुणों का विकास एकान्त में अच्छी तरह होता है और चरित्र का निर्माण संसार के भीषण कोलाहल में होता है। - गेटे

जिला कारागार रतलाम में गूँज रहा है **गायत्री मंत्र**

रतलाम। मध्य प्रदेश

जिला कारागार रतलाम में आयोजित एक कार्यक्रम में गायत्री परिवार शाखा बुधनी के सौजन्य से कारागार में गायत्री मंत्र बॉक्स स्थापित किए गए। इस अवसर पर उपस्थित बंदी भाइयों को गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ एवं साहित्य भेंट किया गया। नैष्ठिक परिजन श्री प्रेमलाल कुशवाहा ने बंदियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज वैचारिक प्रदूषण के कारण ही संसार में अपराधी प्रवृत्ति बढ़ रही है। गायत्री मंत्र के प्रभाव से कारागार का वातावरण सात्विक बनेगा, बंदियों में सद्भाव जगेगा, वे सन्मार्ग अपनाने के लिए प्रेरित होंगे। कार्यक्रम में जेल अधीक्षक श्री लक्ष्मण सिंह भदौरिया जी, जेलर श्री बी.बी. प्रसाद एवं बृजेश कुमार मकवाना सहित समस्त स्टाफ उपस्थित था।

गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता बंदियों को सम्बोधित करते हुए

वृक्षगंगा अभियान से प्रभावित हुए न्यायाधीश

पैतृक गाँव में लगवा रहे हैं 280 वृक्ष

जहानाबाद। बिहार

प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ जहानाबाद ने 11 सितम्बर को 67वाँ साप्ताहिक वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न किया। इस अवसर पर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स जहानाबाद में फूलों के 250 पौधे एवं जिलाधिकारी के आवासीय परिसर में फूलों के 150 पौधे रोपे गए। युवाओं द्वारा चलाए जा रहे इस वृक्षारोपण अभियान से प्रेरित होकर जहानाबाद न्यायालय में पदस्थापित युवा न्यायाधीश श्री वैभव कुमार ने नालंदा जिलें में स्थित अपने पैतृक गाँव छोटी आंट में 80 पौधों का रोपण किया। उन्होंने चंदन, कपूर, आम, महोगनी, सागवान, अमरूद इत्यादि के पौधे लगवाये। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण में अपनी गरिमामय भागीदारी सुनिश्चित करने के भाव से कुछ ही दिनों में वृक्षों की 200 और पौध लगाने का निश्चय किया है।

"मुझे गायत्री परिवार द्वारा चलाये जा रहे वृक्षारोपण अभियान में कई बार शामिल होने का अवसर मिला। इससे मेरे मन में भी वृक्षारोपण का भाव जगा।"
– श्री वैभव कुमार, न्यायाधीश

युवा प्रकोष्ठ का 125 वाँ नशामुक्ति आयोजन

बड़े परदे पर प्रभावी प्रदर्शन

देवास। मध्य प्रदेश : गायत्री परिवार देवास ने जिला मुख्यालय से 30 कि.मी. दूर तहसील टोंकखुर्द के गाँव गरखेड़ा में नशामुक्ति दीपयज्ञ कर अनेक ग्रामीणों को नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प दिलाया। ग्राम सरपंच सहित कई परिजनों के सहयोग से एक प्रज्ञा मंडल का गठन हुआ, जो गायत्री परिवार द्वारा संचालित सामाजिक गतिविधियों को नियमित रूप से चलाता रहेगा।

ग्राम बरखेड़ा में गायत्री परिवार ने सर्वप्रथम हजारीलाल चौहान एवं सालिगराम सकलेचा के नेतृत्व में नशामुक्ति रैली निकालकर लोगों को दीपयज्ञ में भागीदारी का निमंत्रण दिया। रैली में लगाए गए नशा विरोधी नारों से लोग बहुत प्रभावित हुए।

गायत्री नशा बन्दी दीपयज्ञ के अवसर पर श्री प्रमोद निहाले ने ग्रामीणों में आत्मोत्थान की उमंग जगाई। उन्होंने कहा कि अगर गाँववासी मिलकर प्रयास करें तो गाँव को सुखी, सम्पन्न और आदर्श बनाया जा सकता है। इसके लिए उन्होंने संस्कार परम्परा को पुनर्जीवित करने, कुरीतियों, आडंबर और फैशन से बचने की प्रेरणा दी, संकल्प कराए।

बड़े परदे पर नशा सम्बन्धी आँखें खोल देने वाले दृश्य और आँकड़े दिखाए गए, जिन्होंने लोगों को बहुत प्रभावित किया। अनेक लोगों ने नशा व अन्य कुरीतियाँ त्यागने के संकल्प लिए।

नशामुक्ति पर दिखाई जा रही फिल्म मंत्रमुग्ध होकर देखते ग्रामवासी

सेवानिवृत्त कर्मचारियों का सम्मान राष्ट्रसेवा में जुटने का आह्वान

वरिष्ठ नागरिकों को सम्मानित करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

जैसलमेर। राजस्थान

गायत्री परिवार जैसलमेर ने गायत्री शक्तिपीठ पर सेवा निवृत्त कर्मचारियों के सम्मान में एक समारोह आयोजित किया। इस अवसर पर उन्हें गायत्री परिवार द्वारा लोकमंगल के लिए किए जा रहे रचनात्मक कार्यों का परिचय कराया गया और उनमें सहयोगी बनकर राष्ट्र की सेवा करते हुए जीवन को सार्थक करने की प्रेरणा दी गई।

यह कार्यक्रम शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जे.एस. पराशर की अध्यक्षता में आयोजित हुआ था। बड़ी संख्या में वरिष्ठ नागरिकों (पेंशनर्स) ने इसमें भाग लिया। श्री रितेश श्रीमाली ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री उम्मेद सिंह तंवर, विशिष्ट अतिथि राज्य महिला आयोग की सदस्य सुश्री अंजना मेघवाल, उपजिला प्रमुख डॉ. भूपेन्द्र बारूपाल, श्री चूनाराम, श्री सीयाराम थे।

देवपूजन, अतिथि सम्मान और भावभरे संगीत के बाद श्री बाबूदान चारण ने अपने स्वागत उद्बोधन में परम पूज्य गुरुदेव की युग निर्माण योजना पर प्रकाश डाला। अतिथि महानुभावों ने अपने उद्बोधन में मानव जीवन की गरिमा, राष्ट्रसेवा का दायित्व, समय का सदुपयोग और युगऋषि के विचारों के सान्निध्य में सामाजिक नेतृत्व जैसे विषयों पर प्रकाश डाला। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री पराशर जी ने वानप्रस्थ जीवन के सार्थक सदुपयोग की आवश्यकता एवं युग के नवनिर्माण में गायत्री एवं यज्ञ की महत्ता समझाई।

मंचासीन अतिथियों ने तिलक लगाकर, पवित्र ओढ़नी ओढ़ाकर एवं सद्साहित्य भेंटकर सेवानिवृत्त वरिष्ठ जनों का सम्मान किया। श्री घनश्याम छंगाणी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

माताजी के महाप्रयाण दिवस पर नारी जागरण संगोष्ठी

जैसलमेर। राजस्थान

दिया जैसलमेर द्वारा वंदनीया माताजी के महाप्रयाण दिवस पर महिला विचार गोष्ठी और दीप यज्ञ का आयोजन किया गया। पारुल बंसल एवं अनिता शर्मा ने प्रज्ञा गीतों के माध्यम से नारी-गौरव एवं दायित्वों का बोध कराया। रेखा कंवर, ने माताजी द्वारा शुरू किए गए नारी जागरण आंदोलन की जानकारी दी। मोनिका पुरोहित ने आत्मविश्वास, रजनी शर्मा ने नारी द्वारा बच्चों को संस्कार देने, माया बोरावट ने परिवार निर्माण में नारी की भूमिका, गायत्री कंवर ने दैनिक बलिवैश्व यज्ञ की आवश्यकता, संगीता राठौड़ ने नारी की नेतृत्व क्षमता तथा गुलाब कंवर ने नारी जागरण की आवश्यकता पर विचार प्रस्तुत किए। जया, पूर्णिमा सहित सभी उपस्थित महिलाओं ने दीप यज्ञ के द्वारा वंदनीया माताजी को श्रद्धांजलि अर्पित की। मनीषा छंगाणी के अनुसार नारी जागरण आंदोलन को विस्तार देने के संकल्प के साथ दीप यज्ञ की पूर्णाहुति हुई।

बाल संस्कार शाला आचार्य प्रशिक्षण शिविर

धमतरी। छत्तीसगढ़

धमतरी जिले में इन दिनों 85 बाल संस्कार शालाएँ संचालित हो रही हैं।

गायत्री प्रज्ञापीठ गुजरा, जिला धमतरी द्वारा दिनांक 18 सितम्बर को साहू समाज भवन गुजरा में बाल संस्कार शाला आचार्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इसमें आस-पास के गाँवों से आए 70 युवाओं ने भाग लेकर अपने-अपने गाँवों में बाल संस्कार शाला खोलने का संकल्प लिया। गायत्री परिवार के प्रांतीय प्रशिक्षक श्री चम्पेश्वर साहू मुख्य प्रशिक्षक थे। उन्होंने अत्यंत सरलता और सहजता के साथ आचार्यों को बच्चों के व्यक्तित्व विकास की प्रेरणा दी और बाल संस्कार शाला में अपनाई जाने वाली कार्ययोजना का प्रशिक्षण दिया।

श्री चम्पेश्वर साहू ने बताया कि व्यक्तित्व में सच्चरित्रता, सुसंस्कारिता और सद्गुणों का समावेश करने का उपयुक्त समय बचपन ही है। इस संस्कार शाला में 10 से 14 वर्ष के बच्चे प्रति रविवार 2 घंटे के लिये शिक्षण लेंगे। प्रार्थना, वन्दना, ध्यान, सदवाक्य चिंतन, कहानी गीत, महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग, उनकी जयंती, विभिन्न पर्व, संस्कार, खेल, योग, स्वस्थ रहने की कला इत्यादि के माध्यम से उनके व्यक्तित्व और विचारों को अपनी महान संस्कृति के अनुरूप गढ़ने के प्रयास किए जाएँगे।

ध्यान साधना करती बालिकाएँ

परम पूज्य गुरुदेव एवं वन्दनीया माताजी का जन्म जयंती समारोह

नारी सशक्तीकरण सम्बन्धी विचार गोष्ठी

नोएडा। उत्तर प्रदेश

नारी जागृति अभियान, वृहत्तर दिल्ली ने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी की जन्म जयंती के अवसर पर एक विचार गोष्ठी 'नारी सशक्तीकरण और विचार प्रबंधन' का आयोजन किया। गायत्री चेतना केंद्र, नोएडा में दिनांक 17 सितंबर की मध्याह्न आयोजित यह विचार गोष्ठी अत्यंत ज्ञान और उत्साहवर्धक थी।

श्रीमती वीना सोम ने भावी पीढ़ी के नवनिर्माण में नारी की भूमिका पर प्रकाश डाला। श्रीमती कंचन गुप्ता ने शान्तिकुञ्ज द्वारा चलाए जा रहे 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान की जानकारी दी। श्रीमती कान्ता जड़िया ने बहिनों को इस अभियान से जुड़ने और जोड़ने के लिए प्रेरित किया। श्रीमती ममता सक्सेना ने यज्ञोपेथी पर हो रही शोध के बारे में बताया। श्रीमती अनुराधा झा ने नारी-स्वास्थ्य की चर्चा की।

श्रीमती अर्चना श्रीवास्तव ने अपने क्षेत्र में कॉलोनी के पार्क को श्रीराम वाटिका के रूप में विकसित करने में महिला मंडल द्वारा किए गए सफल प्रयासों के बारे में बताया। महिला मंडल नोएडा द्वारा पर्यावरण संरक्षण पर लधु नाटिका प्रस्तुत की गई। श्रीमती मधु खंडेलिया ने झटीकरा में 10 नवंबर से 13 नवंबर तक होने वाले 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आह्वान किया। श्रीमती अनुराधा झा के क्षेत्र में चल रहे महिला मंडल ने महँगाई और स्वावलंबन पर लधु नाटिका प्रस्तुत की।

प्रो. कमला भारद्वाज, संस्कृत भारती दिल्ली प्रान्त की महिला प्रमुख मुख्य अतिथि थीं। श्रीमती मीना दीक्षित ने जोन की महिलाओं को परम वंदनीया माताजी के जीवन के अत्यंत भावभरे प्रसंगों का स्मरण कराते हुए समाजोत्कर्ष के लिए समर्पित होने की प्रेरणा दी, धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संयोजन श्रीमती कान्ता जड़िया ने किया।

गायत्री चेतना केन्द्र, नोएडा पर आयोजित विचार गोष्ठी

'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी'

सिरोही। राजस्थान

यदि हम चाहते हैं कि परिवार में आने वाला शिशु अपने माता-पिता, कुल, परिवार तथा समाज के लिए विडंबना न बने, अपने सौभाग्य और गौरव का कारण बने तो हमें ऋषियों द्वारा प्रचलित संस्कार परम्परा को अपानाना चाहिए।

शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. राधेश्याम क्षोत्रीय ने परम पूज्य गुरुदेव द्वारा संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन की प्रशंसा करते हुए यह विचार व्यक्त किए। वे गायत्री शक्तिपीठ सिरोही से सम्बद्ध महिला मंडल द्वारा शहर के राठौड़ लाईन स्थित आँगनवाड़ी केन्द्र में पुंसवन संस्कार की परम्परा को प्रोत्साहित करने के लिए आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे।

डॉ. क्षोत्रीय ने पुंसवन संस्कार के वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रभावों की जानकारी देते हुए श्रोताओं में इस संस्कार के प्रति आस्था बढ़ाई। उन्होंने कहा कि मनचाही संतान की प्राप्ति के लिए गर्भस्थ शिशु के माता-पिता तथा परिवार के सभी सदस्यों को उसी गरिमा के अनुरूप आचरण करना चाहिए।

यह कार्यक्रम शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री रामेश्वर सुखवाल की टोली की उपस्थिति में आयोजित किया गया था। शक्तिपीठ प्रतिनिधि श्री संजय कुमार वर्मा ने महिला मंडल द्वारा चलाये जा रहे आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान की जानकारी दी।

नई बाल संस्कार शाला का शुभारम्भ

पवनी, बलौदाबाजार। छत्तीसगढ़

गायत्री प्रज्ञापीठ पवनी द्वारा संचालित विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों के अंतर्गत दिनांक 11 सितम्बर 2022 से एक नई पहल हुई। प्रज्ञापीठ पर बच्चों व युवाओं के नैतिक एवं चारित्रिक उत्थान के लिए नई बाल संस्कार शाला का शुभारंभ हुआ, जिसमें 25 से 30 बच्चे सम्मिलित हुए। प्रेरणाप्रद युग संगीत एवं प्रेरक प्रसंग, बाल निर्माण की कहानियों के माध्यम से शिक्षण प्रारंभ किया गया।

बाल संस्कार शाला के पहले दिन बच्चों की भगीदारी

शिक्षकों का सम्मान

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव में मनाए गए शिक्षक दिवस समारोह में लायंस क्लब राजनांदगाँव ने विद्यालय के दस शिक्षकों को पुरस्कृत किया। विद्यालय के भूतपूर्व शिक्षक श्री विवेक साव के पिता स्व. श्री किशोर राव की स्मृति में पाँच शिक्षकों को शिक्षा के क्षेत्र में उनके सराहनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

मनस्वी पर्वत के समान ऊँचे तथा सागर के समान गम्भीर होते हैं, उनका पार पाना आसान काम नहीं है। - माघ

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के प्रवास से मालवा क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं में नवऊर्जा का संचार

इन दिनों परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी-2026 को लक्ष्य कर युग निर्माणी कार्यकर्त्ताओं में विशेष उत्साह है। स्वतंत्र भारत के स्वर्णिम काल में अध्यात्म को उसकी सनातन गरिमा के शिखर पर प्रतिष्ठित करने का अभियान पूरे जोश और उल्लास के साथ चलाया जा रहा है। इस उत्साह के अभिवर्धन में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रति कुलपति देसंविवि. के प्रवास बहुत ही प्रभावशाली सिद्ध हो रहे हैं।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी 8 एवं 9 सितम्बर को मध्य प्रदेश के मालवा संभाग और हरदा, होशंगाबाद जिलों के प्रवास पर थे। उनकी 10 से अधिक स्थानों पर सुनियोजित सभाएँ हुईं। हजारों कार्यकर्त्ताओं को भावी सक्रियता के लिए नई प्रेरणा और नई ऊर्जा मिली। कार्यक्रमों में उपस्थित श्रद्धालुओं को ऐसा व्यावहारिक मार्गदर्शन मिला जो उनके जीवन की दिशा बदल सकता है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी माकड़ौन की जनसभा को सम्बोधित करते हुए

इंदौर में भव्य स्वागत

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी 8 सितम्बर को इन्दौर पहुँचे। हवाई अड्डे पर मध्य जोन प्रभारी सर्वश्री योगेंद्र गिरि, जोन समन्वयक राजेश पटेल, युवा प्रकोष्ठ समन्वयक विवेक चौधरी, अमर धाकड़, अरविंद खरे, डॉ. पी.सी. दुबे, जगदीश यादव, ओम चावड़ा, रामचंद्र गायकवाड़, श्री पंवार जी सहित अनेक प्रमुख परिजनों ने उनका भव्य स्वागत किया।

पहला कार्यक्रम एमआर-10 पर निर्माणाधीन गायत्री चेतना केंद्र के निर्माण कार्य एवं प्रगति के अवलोकन का था। डॉ. चिन्मय जी ने इस केन्द्र के निर्माण के प्रमुख शिल्पी सर्वश्री नारायण प्रसाद चावड़ा, कोमल प्रसाद, श्रीकृष्ण शर्मा, ओम चावड़ा, सुबोध जी आदि के साथ आगामी रूपरेखा एवं कार्ययोजना पर चर्चा की, मार्गदर्शन दिया।

माकड़ौन में विशाल सभा

उज्जैन जिले के ग्रामतीर्थ माकड़ौन में 24 कुण्डीय यज्ञ चल रहा था। आद् चिन्मय जी ने इसके दीपयज्ञ में पहुँच कर कार्यक्रम को अत्यंत प्राणवान बना दिया। उनकी स्नेहासिक्त आत्मीयता और व्यक्तित्व में घुले-मिले अध्यात्म के स्पर्श हेतु हजारों की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। आसपास के गाँवों के अलावा देवास, शाजापुर, मंदसौर एवं रतलाम जिले के परिजन भी आए। माकड़ौन की नन्हीं बालिकाओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से सामाजिक संदेश दिया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने विशेष रूप से युवाओं का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि हमारे देश के गाँवों में अभी संस्कृति संरक्षित है। हमें इस संस्कृति की बुनियाद पर देश को पुनः विश्वगुरु बनाना है। कार्यक्रम संचालन श्री राजेश पटेल-जोन समन्वयक मध्य प्रदेश द्वारा किया गया।

मेरखेड़ी में परिजनों के यहाँ देवस्थापना

सिरोल्या में परिजनों से भेंट-आत्मीयता संवर्धन

देवास बायपास पर -देवास के परिजनों ने इंदौर से माकड़ौन जाते समय देवास बायपास पर 51 कुण्डीय गायत्री यज्ञ स्थल होटल प्रशांत परिसर में आदरणीय डॉ. चिन्मय जी का स्वागत-अभिनंदन किया। स्वागतकर्त्ताओं में सुश्री दुर्गा जीजी, रमेशचंद्र मोदी, कन्हैयालाल मोहरी, जगदीश चौहान, सुभाष जैन, सीपी शर्मा, प्रमोद निहाले, महेश पण्ड्या, संतोष शर्मा एवं देवकरण कुमावत सहित अनेक परिजन उपस्थित थे। आदरणीय चिन्मय जी ने सभी की कुशलक्षेम जानी तथा श्रद्धेयद्वय के शुभाशीष पहुँचाये।

सिरोल्या : गायत्री मंदिर सिरोल्या के संस्थापक शतायु नारायणदास जी महाराज ने बड़े ही प्रेम एवं आत्मीयता के साथ डॉ. चिन्मय पण्ड्या का शॉल-श्रीफल भेंट कर स्वागत किया। इस उम्र में भी उनकी ऊर्जा और डॉ. चिन्मय जी की आत्मीयता का संयोग भावविभोर कर देने वाला था। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उपस्थित श्रद्धालुओं में भक्तिभाव का संचार करते हुए व्यसन और भौतिकता का चोला उतारकर आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि पूज्य गुरुदेव का दिया मंत्र 'हम बदलेंगे, युग बदलेगा और हम सुधरेंगे युग सुधरेगा' को अमल में लाने से ही उद्धार संभव है।

मेरखेड़ी ग्राम में कई प्रमुख परिजनों के घर देवस्थापना कराई। सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री महेश चौधरी के निवास पर स्थानीय एवं आसपास के परिजनों ने भेंट की। अगली सुबह हाटपिपल्या जाते समय ग्राम सुलपाखेड़ा में डॉ. रूपसिंह नागर तथा ग्राम मोरुखेड़ी में श्री दिनेश चौधरी सहित सैकड़ों परिजनों ने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत किया।

कन्नौद : आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने गायत्री शक्तिपीठ कन्नौद पहुँचकर वहाँ उपस्थित परिजनों से व्यक्तिगत रूप से भेंट की। अपने संक्षिप्त उदबोधन में उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में साधनों की कमी नहीं है, वरन् साधना की कमी है। समाज को श्रेष्ठ बनाने के लिए किसी न किसी एक को संकल्प लेकर के आगे बढ़ना ही पड़ेगा। लेकिन उसके पहले हम सभी को अपने आप को सुधारने की जरूरत है।

विधायक पंडित आशीष शर्मा, पूर्व विधायक बृजमोहन धूत, पूर्व विधायक कैलाश कुंडल, नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि राधेश्याम जाट, जनपद सदस्य परमार जी सहित कई गणमान्य एवं श्रद्धालु कार्यक्रम में उपस्थित थे। समर्पित परिजन श्री राजेन्द्र शर्मा ने सभी की ओर से स्वागत किया। सतवास की बहिनें भी उपस्थित थीं।

खातेगाँव - आज लोगों के पास भौतिक सुविधायें तो बढ़ गई हैं, लेकिन आपसी विश्वास घट गया है, मानसिक शांति गायब हो गई है। ईश्वर ने हमें जो दिया उसे बाँटना आना चाहिए। जो देना जानता है, वही देवता है। यदि कोई व्यक्ति दुःखी है और आप उसके आँसू पोंछने वाला रूमाल बन जायें तो आप भी भगवान बन सकते हैं।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने खातेगाँव पहुँचकर गायत्री शक्तिपीठ पर आयोजित सभा को सम्बोधित करते हुए यह संदेश दिया। उन्होंने डाक बंगले पर वृक्षारोपण भी किया।

खातेगाँव में मेकलसुता परिवार एवं स्कूल के बच्चों ने स्वागत किया। इस अवसर पर नगर परिषद अध्यक्ष भी उपस्थित थे। शक्तिपीठ पर सर्वश्री राजेन्द्र व्यास, जयनारायण यादव, उमेश दुबे, एनपी सराठे, मित्तल जी, उज्जैनिया जी, शिवनारायण जी एवं अन्य परिजनों सहित नगर के भगवताचार्यों ने आदरणीय चिन्मय जी का स्वागत-अभिनंदन किया।

देवास जिले का यह अंतिम कार्यक्रम था। यहाँ से हरदा जाते समय मार्ग में आद. चिन्मय जी ने जबरेश्वर मंदिर संदलपुर, नर्मदातट स्थित सिद्धेश्वर महादेव मंदिर नेमावर एवं रिद्धनाथ महादेव मंदिर में भी पूजा-अर्चना की।

अपनी प्रतिभा को उत्कृष्ट समाज के निर्माण में लगाने में ही हमारे जीवन की सार्थकता है।

- आदरणीय डॉ. चिन्मय जी (हरदा की जनसभा में)

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी हरदा की विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए

हरदा के अग्रवाल मांगलिक भवन में एक विशाल सभा हुई। दीप प्रज्वलन, देवपूजन के उपरान्त गणमान्यों ने आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का भव्य स्वागत-अभिनंदन किया। प्रांतीय युवा समन्वयक श्री विवेक चौधरी ने उनका परिचय दिया एवं कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कई प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं की मनोभूमि एवं भूमिका का गुणानुवाद किया। उन्होंने कार्यकर्त्ताओं को उनके दायित्वों की याद दिलाते हुए कहा कि हमारा लक्ष्य ऐसे उत्कृष्ट समाज का निर्माण करना है, जिसमें मनुष्य देवता बन सके। अपनी प्रतिभा को समाज निर्माण में लगाने में ही हमारे जीवन की सार्थकता है।

इस कार्यक्रम में हरदा बैतूल के सांसद एवं मिशन के समर्पित परिजन श्री दुर्गादास उइके भी उपस्थित थे। उन्होंने छिंदवाड़ा युवा चेतना शिविर के अनुभव एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के सानिध्य के अपने संस्मरण साझा किए। उन्होंने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद एवं श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी की प्रेरणा से ही वे समाज सेवा में संलग्न रहे हैं।

जिला समन्वयक प्रेम नारायण गौर, सियाराम गौर, बलराम राजपूत, विष्णु बिश्नोई, राजेश चौहान, शिवनारायण, निकुंभ देवी सिंह यादव, बलवीर सिंह राजपूत सहित विभिन्न क्षेत्रों से आए लगभग पंद्रह सौ कार्यकर्त्ता इस सभा में उपस्थित थे। सभी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना नैष्ठिक योगदान दिया।

हाटपिपल्या में विराजे महाकाल

आद. डॉ. चिन्मय जी प्राण प्रतिष्ठा करते हुए

9 सितम्बर को देव संस्कृति विवि. के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी हाटपिपल्या पहुँचे, जहाँ उन्होंने गायत्री शक्तिपीठ परिसर में नव स्थापित प्रज्ञेश्वर महादेव की प्राण प्रतिष्ठा करवाई। उन्होंने प्रज्ञा सभागृह का लोकार्पण किया तथा शक्तिपीठ परिसर में वृक्षारोपण किया।

प्रज्ञेश्वर महादेव की प्राण प्रतिष्ठा एवं सभागृह का लोकार्पण

अपने संदेश में आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कार्यकर्त्ताओं के उत्साह और समर्पण की सराहना करते हुए कहा कि यहाँ मात्र मूर्ति की स्थापना नहीं हुई है वरन स्वयं भगवान शिव का अवतरण हुआ है। यदि व्यक्ति के विश्वास, श्रद्धा और समर्पण में शक्ति है तो स्वयं भगवान को भी उनके पास आना पड़ता है। श्रद्धा और समर्पण ही मनुष्य के जीवन में चमत्कार लाते है।

प्राणप्रतिष्ठा एवं मंचीय कार्यक्रम का संचालन शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री ओंकार पाटीदार एवं गायत्री धाम सेंधवा के पंडित मेवालाल जी ने किया। नगर के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री मनोहर गुरुजी ने स्वागत उद्‌बोधन दिया। आदिवासी क्षेत्र से आए परिजनों ने गुरुसत्ता के प्रतिनिधि को पारंपरिक तीर और कमान भेंट कर अपने हृदय के भाव अर्पित किए।

हाटपिपल्या में प्रज्ञेश्वर महादेव के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के मंच पर केन्द्रीय प्रतिनिधि एवं उपस्थित श्रद्धालु

भारतीय संस्कृति के जीवनमूल्यों में निहित है विश्वशान्ति, प्रगति और समृद्धि का मार्ग

- आदरणीय डॉ. चिन्मय जी (नर्मदापुरम की जनसभा में)

नर्मदापुरम (होशंगाबाद)

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 09 सितंबर 22 की सायंकाल शासकीय नर्मदा महाविद्यालय ऑडिटोरियम नर्मदापुरम में प्रबुद्ध वर्ग एवं गायत्री परिजनों के विशाल जनसमूह को संबोधित किया।

पूज्य गुरुदेव के विचार क्रांति के संदेश को उन्होंने उपनिषदों के अनेक दृष्टांत एवं छोटी-छोटी संदेशपरक कहानियों के माध्यम

शेष समाचार पृष्ठ 8 पर ....

पुष्प की सुगन्ध वायु की विपरीत दिशा में नहीं जाती, पर ज्ञान की गन्ध तो दुनिया में फैलती और सुवास बिखेरती है। - हर्बर्ट स्पेन्सर

पीड़ा-पतन निवारण ही भगवान की वास्तविक पूजा।

– आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का गायत्री वेदना निवारण केन्द्र, जयपुर में उद्‌बोधन

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी गायत्री वेदना निवारण केन्द्र में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए

जयपुर। राजस्थान

स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल या अन्य जनोपयोगी भवन भी एक तरह से मंदिर हैं। यहाँ लोगों की पीड़ा का निवारण होता है। जो सोने के मंदिर बनाने की सोच रहे हों, उन्हें इनका निर्माण करवाना चाहिए। इनके माध्यम से होने वाली सेवा ही भगवान की वास्तविक पूजा अर्चना है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने किरण पथ, मानसरोवर स्थित गायत्री वेदना निवारण केंद्र में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए यह बात कही। अखंड दीप और वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी के संदर्भ में आयोजित इस कार्यक्रम में उन्होंने जयपुर में गायत्री वेदना निवारण केंद्र की स्थापना पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि हमें यज्ञ करने के साथ यज्ञ को जीना भी आना चाहिए। भगवान और गुरु सत्ता से जो भी मिला है उसे संसार को देने का समय आ गया है। प्रत्येक व्यक्ति खुद को वेदना निवारण केंद्र मानकर लोगों की मदद के लिए आगे आए।

दूर हो दिलों की दरिद्रता :

केन्द्रीय प्रतिनिधि ने संतोष, सद्भावना को असली संपदा बताया। उन्होंने कहा कि व्यक्ति कितना भी धनवान क्यों न हो, अगर दिल में दरिद्रता है तो वह दीन-हीन ही माना जाएगा।

आद. डॉ. चिन्मय जी ने कहा-

- हमें यज्ञ करने के साथ यज्ञ को जीना भी आना चाहिए।
- गायत्री महामंत्र भगवान के पास आने का अत्यंत उत्कृष्ट माध्यम है।

प्रारंभ में दीप प्रज्वलन के उपरान्त प्रान्तीय समन्वयक श्री ओम प्रकाश अग्रवाल, शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री आर.डी. गुप्ता, जयपुर उप जोन समन्वयक श्री सुशील कुमार शर्मा, युवा कार्यकर्ता डॉ. प्रशांत भारद्वाज ने आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या को साफा पहनाकर, माल्यार्पण एवं तिलक कर स्वागत किया। इस दौरान गायत्री महामंत्र और तालियों की गड़गड़ाहट गूँजती रही।

युग साहित्य भवन का लोकार्पण

पिलानी, झुंझुनू। राजस्थान

17 सितम्बर 2022 को आद. डॉ. चिन्मय जी द्वारा गायत्री चेतना केन्द्र पिलानी में नवनिर्मित युग साहित्य भवन का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर उन्होंने साहित्य भवन की स्थापना से युवा पीढ़ी को मिलने वाली बौद्धिक दिशा के विषय में जानकारी दी। इससे पूर्व चेतना केन्द्र के प्रबन्ध ट्रस्टी डॉ. राजेन्द्र खरे, सर्वश्री गोविन्द सोनी, देवेंद्र सिंह, बालकिशन मित्तल, सुशील मित्तल, राजेश धारीवाल, श्री कैलाश जी आदि ने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत किया।

पिलानी के कार्यक्रम में निकटवर्ती चार जिलों के लगभग 500 कार्यकर्त्ता शामिल हुए। प्रायः सभी आदरणीय डॉ. चिन्मय जी की प्रेरणा से अपने-अपने क्षेत्रों में मिशन का काम तेजी से करने का संकल्प लेकर गए।

भावभरा अनुदान

गायत्री चेतना केन्द्र पर युग साहित्य भवन का निर्माण डॉ. मंजुला खरे धर्मपत्नी डॉ. राजेंद्र खरे की ओर से लगभग पच्चीस लाख रुपये की लागत से 2000 वर्ग फीट में किया गया है।

कार्यकर्त्ताओं का सम्मान

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने दस कार्यकर्त्ताओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस क्रम में सर्वश्री देवेंद्र सिंह, श्री बजरंगलाल सोनी, श्री सुशील तुलस्यान, श्री आलोक कलोया, श्री चंद्रजीत शर्मा, श्रीमती प्रेमलता सोनी, श्रीमती राजकुमारी सोनी आदि सम्मानित किये गए।

गायत्री शक्तिपीठ पिलानी पर आयोजित सभा को सम्बोधित करते केन्द्रीय प्रतिनिधि

जीवन में उद्‌देश्य और संकल्प की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

स्व. श्री वीरेन्द्र अग्रवाल जी की जन्म एवं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में आयोजित हुई सभा

18 सितम्बर की सायं बिड़ला ऑडिटोरियम जयपुर में डॉ. चिन्मय जी ने 'मानव जीवन वरदान या अभिशाप' विषय पर विशिष्ट संदेश दिया। उन्होंने कहा कि मानव जीवन हमें ईश्वर से सौभाग्य और संभावनाओं के रूप में मिला है। जो इस तथ्य से अनभिज्ञ रहकर पशुवत जीवन जीते हैं, उन्हें ही यह अभिशाप प्रतीत होता है। जो संकल्पपूर्वक ऊँचे उद्‌देश्यों के लिए जीते हैं, उनके लिए यह वरदान है।

यह कार्यक्रम मिशन के लिए अनन्य भाव से समर्पित कार्यकर्त्ता स्व. श्री वीरेन्द्र अग्रवाल की जन्म एवं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में आयोजित था। इस अवसर पर पूर्व खाद्य मंत्री श्री प्रताप सिंह खाचरियावास, कृषि मंत्री श्री लालचंद कटारिया, स्व. श्री वीरेन्द्र जी के सुपुत्र श्री आलोक अग्रवाल, श्री संजय गुप्ता एवं राजू मंगोडीवाला ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। कार्यक्रम से प्रभावित श्रोताओं ने जनमानस के परिष्कार हेतु सक्रियता के संकल्प लिए।

पिछड़े वनवासियों के उत्थान के लिए समर्पित शिक्षा सेवाओं का लोकार्पण

व्यक्ति अपने शुभकर्म एवं सद्‌विचारों से महान बनता है। - **डॉ. चिन्मय जी**

मनखेड, नासिक। महाराष्ट्र

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रति कुलपति देसंविवि. 10 सितम्बर 2022 को नासिक जिले के आदिवासी क्षेत्र सुरगाणा तहसील के मनखेड ग्राम में गायत्री परिवार द्वारा संचालित शिक्षा सेवाओं का अवलोकन करने पहुँचे। उल्लेखनीय है कि गायत्री परिवार युग निर्माण योजना ट्रस्ट नासिक एवं अमेरिका निवासी कैलासवासी धनसुखभाई लोहार के सौजन्य से मनखेड के आश्रमशाला में लगभग ₹1,58,000/- की लागत से कन्या एवं छात्रों के लाभार्थ अनेक प्रकार की शिक्षा सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं, जिनका अवलोकन शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के मनखेड पहुँचने पर ग्रामवासियों एवं अनेक संस्थाओं ने पारम्परिक वाद्ययंत्र एवं नृत्य के साथ भव्य स्वागत किया। तत्पश्चात् नवनिर्मित पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य विद्या संकुल (जूनियर कॉलेज) भवन एवं ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल का लोकार्पण समारोह आयोजित हुआ। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अपने संदेश में संत श्री तुकाराम महाराज के जीवन की घटनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि आदमी धन-दौलत से बड़ा नहीं होता, वह अपने शुभकर्म एवं सद्‌विचारों से महान बनता है। इस अवसर पर उन्होंने स्व. श्री धनसुखभाई लोहार तथा वनवासियों के उत्थान के लिए सहयोग करने वाले समस्त महानुभावों की उदारता का अभिनन्दन किया।

मनखेड में सन् 2015 से अगस्त 2022 तक गायत्री परिवार द्वारा की गई स्थापनाएँ

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य विद्या संकुल (जूनियर कॉलेज)

- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य छात्रालय (250 कन्याओं के लिए छात्रावास)
- माँ भगवती देवी शर्मा भोजनालय
- कप्यूटर एवं आधुनिक सुविधाओं से युक्त विज्ञान प्रयोगशाला
- सोलर सिस्टम द्वारा 24 घंटे बिजली
- 2 कि.मी. दूर से पानी की व्यवस्था
- शुद्ध पानी के लिए आरओ प्लाण्ट

कार्यक्रम में भूतपूर्व सांसद श्री. हरिश्चंद्र चव्हाण एवं स्नेहबंधन शिक्षण संस्था की अध्यक्षा श्रीमती कलावती चव्हाण मुख्य रूप से उपस्थित थे।

चिकित्सा सेवाएँ

लोकार्पण समारोह के साथ आदिवासियों के लाभार्थ विशाल चिकित्सा एवं नशामुक्ति शिविर का आयोजन किया गया। 800 लोगों ने चिकित्सा शिविर का लाभ लिया। ₹ 91,000/- की दवाइयाँ निःशुल्क वितरित की गईं। इस शिविर में नासिक, मुंबई, नागपुर एवं अमरावती से प्रायः हर क्षेत्र के विशेषज्ञ डॉक्टरों को आमंत्रित किया गया था।

शेष समाचार पृष्ठ 8 पर ....

बन रहा है श्रद्धा-समर्पण का दिव्य स्मारक गायत्री शक्तिपीठ हिण्डौन सिटी

हिण्डौन सिटी, करौली। राजस्थान

18 सितम्बर की प्रातः आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने हिण्डौन सिटी में बन रहे भव्य गायत्री शक्तिपीठ के लिए शिलापूजन एवं शिलान्यास किया। उन्होंने शिलान्यास से पूर्व शिलाओं का गंगाजल, पंचगव्य, पंचामृत से अभिषेक तथा औजारों का पूजन भी किया। इस अवसर पर उन्होंने इस शक्तिपीठ के माध्यम से लोकमंगल के अभीष्ट प्रयोजनों के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने की प्रार्थना की।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी शक्तिपीठ का शिलान्यास करते हुए

शिलापूजन-शिलान्यास का कार्यक्रम नौ कुण्डीय यज्ञ के साथ आयोजित था। आद. डॉ. चिन्मय जी ने आशा व्यक्त की कि कार्यकर्त्ताओं के उदात्त समर्पण के प्रभाव से यह समाज निर्माण एवं युग निर्माण के महान उद्‌देश्य को सफलतापूर्वक पूरा करेगा। उपस्थित सैकड़ों श्रद्धालु-साधकों ने जनकल्याण एवं सर्वमंगल की कामना के साथ आहुतियाँ दीं।

दानदाताओं एवं कर्मठ कार्यकर्त्ताओं का अभिनन्दन-आत्मीयता संवर्धन

कार्यक्रम के अंत में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने क्षेत्रीय कार्यकर्त्ता सर्वश्री श्याम सिंह, रवि सिंह इन्दौलिया, श्याम सुंदर शर्मा एवं बहादुर सिंह सोलंकी तथा शक्तिपीठ निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे दानदाताओं की निष्ठा और समर्पण भावना का अभिनन्दन किया। इस अवसर पर समर्पित कार्यकर्त्ता न्यायाधीश श्री सतीश कौशिक, श्री विवेक बंसल, डॉ. शुभम बंसल, डॉ. देवेंद्र बंसल, डॉ. अनिता बंसल, डॉ. प्रवीण कांत शर्मा, श्री प्रहलाद गुप्ता, श्री वेदप्रकाश बंसल, श्री रामअवतार बंसल, श्री राजकुमार गुप्ता, श्री मुकेश गोयल, श्री सुभाष अग्रवाल मुख्य रूप से उपस्थित थे।

समारोह में उपस्थित जनमेदिनी

मनुष्य का सच्चा जीवन तब प्रारम्भ होता है, जब वह यह अनुभव कर लेता है कि शारीरिक जीवन अस्थिर है और वह संतोष नहीं दे सकता। - टालस्टाय

स्नेहसलिला श्रद्धेया शैल जीजी प्रियदर्शिनी अकादमी द्वारा वैश्विक पुरस्कार से सम्मानित

गुरुदेव-माताजी के चरणों में समर्पित किया सम्मान

यह उन 15 करोड़ परिजनों का सम्मान है, जिन्होंने समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए अपना सब कुछ लगा दिया। - **श्रद्धेया शैल जीजी**

मानवता के उत्थान हेतु समर्पित वैश्विक स्तर के विशिष्ट महानुभावों को हर वर्ष सम्मानित करने वाली प्रतिष्ठित संस्था 'प्रियदर्शिनी अकादमी' ने अपने वर्ष 2022 के सम्मान समारोह में स्नेहसलिला श्रद्धेया शैल जीजी को 'प्रह्लाद पी. छाबरिया स्मृति वैश्विक पुरस्कार' प्रदान कर सम्मानित किया। श्रद्धेया जीजी मुम्बई में आयोजित सम्मान समारोह से शान्तिकुञ्ज से ऑनलाइन जुड़ी थीं। मुख्य अतिथि केन्द्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री माननीय श्री नितिन गड़करी एवं महाराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष श्री राहुल नार्वेकर ने उन्हें यह सम्मान प्रदान किया।

प्रियदर्शिनी अकादमी द्वारा यह प्रतिष्ठित समारोह 19 सितम्बर की सायं आयोजित किया गया था। श्रद्धेया शैल जीजी ने इस अवसर पर दिए अपने संदेश में कहा कि आज हमारी परम वंदनीया माताजी का जन्मदिन है। इस शुभ दिन पर यह सम्मान पाकर मिशन के 15 करोड़ परिजन एवं वैश्विक स्तर पर सक्रिय 5000 संस्थान अपने को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं।

श्रद्धेया शैल जीजी ने कहा कि यह अखिल विश्व गायत्री परिवार से जुड़े करोड़ों लोगों का सम्मान है, जिन्होंने अपनी गुरुसत्ता के आह्वान पर पीड़ित मानवता के उत्थान के लिए रात-दिन एक कर दिया। जब भी समाज और राष्ट्र को जरूरत पड़ी, अपने पेट की रोटी काटकर अपना सबकुछ राष्ट्र के नवनिर्माण में लगा दिया। श्रद्धेया जीजी ने प्राप्त सम्मान को गुरुदेव-माताजी के चरणों में समर्पित कर दिया।

श्रद्धेया जीजी को नारी सशक्तीकरण एवं समाज के नैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक पुनरुत्थान में विशिष्ट योगदान हेतु यह पुरस्कार प्रदान किया गया है। उनके परिचय के क्रम में श्रद्धेया जीजी द्वारा अपने स्नेह-सद्भाव से करोड़ों लोगों का जीवन बदलने, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के माध्यम से विद्यार्थियों को शान्ति-सद्भाव का संदेश वाहक बनाने, पीड़ित मानवता की सेवा-सहायता में उल्लेखनीय योगदान देने, नारी सशक्तीकरण, आपदा प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण जैसे कार्यों का उल्लेख किया गया।

परम वंदनीया माताजी के जन्म दिवस पर गौरवान्वित हुए परिजन।

समारोह में ग्लोबल अवार्ड एडवाइजरी कमेटी के अध्यक्ष श्री आर.ए. मशेलकर, प्रियदर्शिनी एकेडमी के अध्यक्ष श्री निरंजन हिरानंदानी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री सुरेश प्रभु, महाराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष श्री राहुल नार्वेकर ऑनलाइन जुड़े थे।

इस सम्मान समारोह में प्रियदर्शिनी अकादमी ने श्रद्धेय शैलदीदी के साथ सुश्री पेट्रीसिया स्पिनोजा, श्री संजीव गोयनका, श्री कंवल जीत जावा, मोहम्मद अजीज खान, श्री डेरियो वर्टहाय, श्रीमती आलिया भट्ट को भी सम्मानित किया।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलाधिपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय नवरात्र के नौ दिनों में विद्यार्थियों का विशिष्ट मार्गदर्शन करते हुए

भावपूर्ण भक्ति से ही होती है भगवत्कृपा की प्राप्ति

नवरात्र की विशिष्ट व्याख्यानमाला में कुलाधिपति जी ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार एवं जिज्ञासु साधकों का मार्गदर्शन किया

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी द्वारा नवरात्र के नौ दिनों में दिए गए यह विशिष्ट व्याख्यान यूट्यूब चैनल 'शान्तिकुञ्ज वीडियो' पर उपलब्ध हैं।

जीवन साधना से आत्मोत्कर्ष की जिज्ञासा रखने वाले सैकड़ों साधकों ने युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में 25 सितम्बर से नवरात्र साधना अनुष्ठान आरम्भ किया। इस विशेष साधना पर्व पर उन्हें युगतीर्थ की प्राण ऊर्जा के साथ शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं से जीवन की दिशाधारा परिमार्जित करने का उत्कृष्ट चिन्तन भी मिला।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी द्वारा नवरात्र काल में नौ दिनों तक चलने वाली व्याखानमाला फिर से आरम्भ हो गई। इस नवरात्र सत्र विषय था 'श्रीमद् भगवद्गीता में भक्त, भक्ति और भगवान की महिमा'।

श्रद्धेय ने अपने प्रथम उद्बोधन में कहा कि व्यक्ति के गुण, कर्म व स्वभाव का समुच्चय ही व्यक्तित्व है, जो कि उसके चिंतन, चरित्र व व्यवहार के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। संसार में जितने भी संत, महापुरुष हुए हैं, उन्होंने जीवन साधना से ही अपने व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बनाया है।

27 सितंबर की सत्संग सभा में श्रद्धेय ने साधकों का अत्यंत भावपूर्ण मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि शुद्ध मन एवं पवित्र भावनाओं की गई साधना से मनोभाव शुद्ध होते हैं। भावपूर्ण भक्ति से ही भगवद्कृपा प्राप्त होती है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण का पाण्डवों पर अनुग्रह, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, प्रहलाद, मीरा, धन्ना जाट, चण्ड कौशिक नाग आदि के अनेक मार्मिक संस्मरणों के साथ उन्होंने बताया कि भक्त की भावना के आधार पर ही ईश्वर के अनुदान प्राप्त होते हैं।

नर्मदापुरम में आयोजित हुआ प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन

नर्मदापुरम के नर्मदा महाविद्यालय सभागार में कार्यकर्त्ताओं द्वारा आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का अभिनन्दन

...... पृष्ठ 6 के शेष समाचार

से अत्यंत सरल और विनम्र शब्दों में प्रस्तुत करते हुए श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति के जीवनमूल्यों में विश्वशान्ति, प्रगति और समृद्धि तथा सभी समस्याओं का समाधान है। हालांकि वर्तमान समय में चुनौतियाँ विकट हैं, किन्तु अपनी संस्कृति पर दृढ़ आस्था हो और उसे जीवन में धारण करने का संकल्प हो तो मनुष्य में देवत्व का उदय असंभव नहीं है। इसके लिए सम्मिलित और समर्पित प्रयासों की जरूरत है।

कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्य और प्रतिभावान व्यक्तियों एवं जनप्रतिनिधियों की विशेष उपस्थिति रही। संचालन मध्य जोन सहसमन्वयक श्री प्रभाकांत तिवारी ने किया। गायत्री परिवार होशंगाबाद के सर्वश्री अनुराग मिश्रा, सुधीर पाठक, सुबोध बारोलिया, ओपी गौर, चंद्रमोहन गौर सहित अन्य परिजनों ने आदरणीय चिन्मय जी का अभिनंदन कर स्मृति चिन्ह भेंट किया। कार्यक्रम में भोपाल से श्री आर.के. गुप्ता, सूरज सिंह परमार, रमेश नागर, एवं महिला मंडल की बहिनों की भी उपस्थिति रही।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी नर्मदा के पावन तट सेठानी घाट पर स्थित गायत्री शक्तिपीठ पर दर्शन-प्रणाम के लिए पहुँचे। वहाँ उन्होंने पूज्य गुरुदेव के होशंगाबाद के प्रवास की स्मृतियों की जानकारी भी ली।

स्काउट-गाइड का पाँच दिवसीय राष्ट्रीय योग शिविर

आद. डॉ. चिन्मय जी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देते हुए

शान्तिकुञ्ज में 18 से 22 सितम्बर की तिथियों में स्काउट गाइड का पाँच दिवसीय राष्ट्रीय योग शिविर आयोजित हुआ। इसमें देश के 18 राज्यों के 55 स्काउट मास्टर्स एवं 42 गाइड कैप्टन्स ने भाग लिया। समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि स्काउट गाइड के व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक सूत्र मनुष्य में छिपी प्रतिभा को निखारते हैं। जिला शिक्षा अधिकारी श्री कमलेश गुप्ता ने शिविर के सफल संचालन में शान्तिकुञ्ज के योगदान की सराहना की। उन्होंने कहा कि शान्तिकुञ्ज हरिद्वार योग को पूरे विश्व में फैलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

शिविर समन्वयक श्री महेन्द्र शर्मा, उत्तराखण्ड भारत स्काउट गाइड सचिव श्री रविन्द्र मोहन काला, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलसचिव बलदाऊ देवांगन, सहित कई गणमान्यों ने अपने अनुभव साझा किए।

कुकुडणे (नासिक) में शिक्षा सेवाओं का लोकार्पण

...... पृष्ठ 7 के शेष समाचार

सुरगाणा तहसील के ही ग्राम कुकुडणे में डांग सेवा मंडळ द्वारा संचालित पंडित जवाहरलाल नेहरू प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय में गायत्री परिवार युग निर्माण योजना ट्रस्ट नासिक एवं स्व. श्री धनसुखभाई लुहार के सहयोग से ₹ 3,00,000/- की लागत से 220 छात्राओं के लिए सर्वसुविधा युक्त माता भगवती देवी शर्मा छात्रालय, अधीक्षक निवास एवं पं. श्रीराम शर्मा आचार्य उपवन का निर्माण कराया गया है। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इन सेवाओं का भी लोकार्पण किया। लोकार्पण समारोह की अध्यक्षता डांग सेवा मंडल की अध्यक्षा श्रीमती हेमलता ताई बिडकर ने की।

इन संस्थाओं द्वारा उंबरपाडा, धांद्रीपाडा, सुळे, शिंदे, वारे, आंबेगण एवं कुकुडणे की छात्राओं के लिए 11000 नोटबुक्स निःशुल्क वितरित की गईं। सभी ट्रस्टी, ग्रामवासी एवं गायत्री परिवार के सर्वश्री अमृतभाई पटेल, मिनानाथ सोनवणे, मणीलाल पटेल, जयंतीभाई नाई, जयगोविंद पांडे, जीवनभाई राठौड़, नवनीत पटेल, गुलाब रामावत आदि कार्यकर्त्ता समारोह में उपस्थित थे।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 12.10.2022
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23